सांध्य दैनिक 4PM

इस मिट्टी में कुछ अनूठा है, जो कई बाधाओं के बावजूद हमेशा महान आत्माओं का निवास रहा है।
–वल्लभभाई पटेल

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 120 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शनिवार 6 जून, 2026

अफगानिस्तान के खिलाफ मानव सुथार ने... 7
कांग्रेस ने यूपी में अपनाया आक्रामक... 3
किशोरावस्था के अनुभव संस्कार... 2

कॉकरोच का आक्रोश

सरकार की सिट्टी पिट्टी गुम

अभिजीत दिपके पहुंचे जंतर-मंतर, भरी हुंकार

एक दिन के प्रदर्शन की मिली अनुमति

जंतर-मंतर पर अभिजीत दिपके की मौजूदगी ने एक नया राजनीतिक सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या यह केवल एक विरोध प्रदर्शन है या फिर युवाओं के असंतोष को संगठित राजनीतिक शक्ति में बदलने की शुरुआत?

» युवाओं की उमड़ी भीड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली का जंतर-मंतर आज एक बार फिर नारों और जनसैलाब से लबरेज हैं। अन्ना आंदोलन के बाद ऐसा महौल पहली बार बन रहा है जिसे सरकार के लिए चुनौती कहा जा सके। आज एक बार फिर सत्ता और सड़क के बीच टकराव का नैरेटिव बनता दिखायी दे रहा है। हाथ में संविधान चेहरे पर चुनौती और आवाज में विद्रोह का स्वर लेकर कॉकरोच जनता पार्टी के प्रमुख अभिजीत दिपके जंतर-मंतर पहुंच चुके हैं।

पुलिस प्रशासन ने प्रदर्शन के लिए महज एक दिन की अनुमति दी है लेकिन सवाल यह है कि क्या यह विरोध सिर्फ एक दिन का रहेगा या फिर आने वाले दिनों में यह सरकार के लिए बड़ी राजनीतिक परीक्षा बन जाएगा? नीट विवाद को लेकर देशभर में छात्रों और अभिभावकों के बीच जो बेचैनी और असंतोष दिखाई दिया उसी जमीन पर यह आंदोलन खड़ा होने की कोशिश कर रहा है। दिपके और उनके समर्थक इसे केवल परीक्षा व्यवस्था का मामला नहीं बल्कि युवाओं के भविष्य और व्यवस्था की जवाबदेही का प्रश्न बता रहे हैं। दूसरी ओर सरकार और उसके समर्थकों का तर्क है कि जांच एजेंसियां अपना काम कर रही हैं और राजनीतिक दल इस मुद्दे को हवा देकर लाभ उठाना चाहते हैं। सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह आंदोलन ऐसे समय में खड़ा हो रहा है जब बेरोजगारी भर्ती परीक्षाओं में देरी और युवाओं की बढ़ती नाराजगी पहले से ही राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनी हुई है। ऐसे में यदि जंतर-मंतर का यह प्रदर्शन सोशल मीडिया से निकलकर देश के दूसरे शहरों तक पहुंचता है तो इसके राजनीतिक असर को नजरअंदाज करना आसान नहीं होगा।

चुनौतियों के बीच जोश हाई

हालांकि चुनौतियां भी कम नहीं हैं। पुलिस की ओर से सीमित अनुमति, प्रशासनिक निगरानी और अदालतों में चल रही प्रक्रियाएं इस आंदोलन की गति को प्रभावित कर सकती हैं। इतिहास गवाह है कि कई आंदोलन शुरुआती शोर के बाद ठंडे पड़ गए जबकि कुछ ने राष्ट्रीय राजनीति की दिशा बदल दी। फिलहाल तस्वीर साफ नहीं है। लेकिन इतना जरूर है कि जंतर-मंतर पर अभिजीत दिपके की मौजूदगी ने एक नया राजनीतिक सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या यह केवल एक विरोध प्रदर्शन है या फिर युवाओं के असंतोष को संगठित राजनीतिक शक्ति में बदलने की शुरुआत? आने वाले कुछ दिन तय करेंगे कि यह हुंकार दिल्ली की सीमाओं तक सिमट जाती है या फिर देश की राजनीति में एक नए अध्याय की भूमिका लिखती है। अभी के लिए जंतर-मंतर पर नजरें हैं सरकार पर सवाल हैं और जवाब का इंतजार पूरे देश को है।

कार्रवाई की बजाय हमारी पोस्ट डिलीट करवा रहे : दीपके

कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दिपके ने सरकार पर आरोप लगाया कि वह परीक्षाओं और भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के आरोप में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे सहित उनकी मांगों पर ध्यान देने के बजाय संगठन की सोशल मीडिया पर ज्यादा ध्यान दे रही है उन्होंने कहा, मेरे दोस्तों, यह एक लंबा संघर्ष है। सोशल मीडिया पर प्रधान के इस्तीफे की मांग शुरू किए हुए एक महीना हो गया है, लेकिन ये लोग इतने बेशर्म हैं कि कार्रवाई करने के बजाय, वे अन्य कामों में लगे हुए हैं, जैसे हमारे अकाउंट हैक करना और हमारी पोस्ट को डिलीट करवाना, आप हमारी पोस्ट डिलीट कर सकते हैं, लेकिन आप हमें इस मंच से मिटा नहीं सकते।

क्या अन्ना आंदोलन जैसी लहर बन पाएगा कॉकरोच आंदोलन?

अभिजीत दीपके के आंदोलन को अन्ना के आंदोलन से जोड़कर देखा जा रहा है और सवाल उठ रहे हैं कि क्या यह आंदोलन भी अन्ना के आंदोलन जैसा होगा? विशेषज्ञों के मुताबिक 11 में जंतर मंतर पर अन्ना हजारे का आंदोलन केवल एक व्यक्ति का आंदोलन नहीं था। वह जनता के भीतर वर्षों से जमा भ्रष्टाचार विरोधी गुस्से का विस्फोट था। सड़कों पर छात्र थे मध्य वर्ग था सामाजिक संगठन थे और मीडिया का अभूतपूर्व समर्थन अन्ना के आंदोलन को मिला था। कॉकरोच आंदोलन की चुनौती भी यही है। क्या वह नीट विवाद और युवाओं के असंतोष को एक व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन में

बदल पाएगा? यह बड़ा सवाल है। फिलहाल इसके पक्ष में सबसे बड़ा तर्क यह है कि देश का युवा वर्ग भर्ती परीक्षाओं, पेपर लीक, रोजगार और अवसरों को लेकर पहले से बेचैन दिखाई देता है। यदि यह आंदोलन खुद को केवल एक परीक्षा या एक मंत्री के इस्तीफे तक सीमित नहीं रखता और शिक्षा तथा रोजगार सुधार जैसे बड़े मुद्दों को उठाता है तो इसकी पहुंच बढ़ सकती है। लेकिन दूसरी तरफ कठिनाइयां भी कम नहीं हैं। अन्ना आंदोलन के पीछे दशकों से स्थापित सामाजिक कार्यकर्ता की विश्वसनीयता थी। वहीं आज का राजनीतिक माहौल कहीं अधिक ध्रुवीकृत है।

दुविधा में राजनीतिक दल

कॉकरोच जनता पार्टी के इस प्रर्दशन ने विपक्षी दलों के सामने भी एक दिलचस्प राजनीतिक दुविधा खड़ी कर दी है। इसके समर्थन और विरोध के लिए बाकयदा अंदरखाने मीटिंग का दौर चल रहा है और वेट एंड वाच पालिसी पर अमल। चाहे बीजेपी हो या कांग्रेस या फिर क्षेत्रीय दल सभी पार्टिया सूरते हाल पर नजरे गढ़ाये हुए हैं और आंदोलन का रूख देख रही है कि यह तेज होता है, कमजोर होता है या फिर मध्यम गति से आगे बड़ता है जोभी देश की जमी जमाई सियास की खाई पर क्या कॉकरोच असर डाल पाएंगे यह देखना होगा। कांग्रेस के लिए यह मुद्दा स्वाभाविक रूप से सरकार को घेरने का अवसर है। पार्टी लंबे समय से बेरोजगारी, पेपर लीक और युवाओं के भविष्य को लेकर केंद्र सरकार पर हमलावर रही है। इसलिए कांग्रेस इस आंदोलन के मुद्दों का समर्थन कर सकती है, लेकिन वह नेतृत्व किसी दूसरे राजनीतिक मंच के हाथ में जाने देना भी नहीं चाहेगी। समाजवादी पार्टी की स्थिति भी कमोबेश ऐसी ही होगी। उत्तर प्रदेश में प्रतियोगी परीक्षाओं और भर्ती प्रक्रियाओं का मुद्दा हमेशा राजनीतिक असर रखता है। सपा युवाओं के मुद्दे पर सरकार को घेरने का मौका नहीं छोड़ेगी, लेकिन वह भी आंदोलन का श्रेय किसी नए राजनीतिक समूह को नहीं देना चाहेगी। आम आदमी पार्टी, वाम दल, राष्ट्रीय जनता दल और कुछ क्षेत्रीय दल भी नैतिक समर्थन की राह चुन सकते हैं।

मीडिया पर इस आंदोलन को कम दिखाने का दबाव बनाया जा रहा : राउत

महाराष्ट्र से शिवसेना यूबीटी सांसद संजय राउत ने कहा है कि यह अच्छी बात है कि युवाओं ने एक मुद्दे पर आंदोलन खड़ा किया है। सरकार इस आंदोलन को दबाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की जा रही है। मीडिया पर भी इस आंदोलन को कम दिखाने का दबाव बनाया जा रहा है। यदि जंतर-मंतर का आंदोलन सफल होता है तो सरकार को इसकी गंभीरता समझनी पड़ेगी। सरकार नहीं चाहती कि यह

आंदोलन देशभर के युवाओं तक पहुंचे, इसलिए प्रशासनिक और पुलिस तंत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है। हजारों युवा सड़कों पर उतर सकते हैं और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग कर सकते हैं अगर पीएम मोदी मंत्री का इस्तीफा नहीं लेते तो स्वच्छ प्रशासन की बात करना उचित नहीं होगा।

किशोरावस्था के अनुभव संस्कार में दिख जाते हैं : अखिलेश

» योगी के टोटी वाले बयान पर घमासान
» सपा प्रमुख ने कई मुद्दों पर सीएम को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा सरकार पर करारा प्रहार किया है। यूपी के पूर्व सीएम ने योगी के टोंटी वाले तंज पर तीखा पलटवार किया है। मुख्यमंत्री की टिप्पणी पर सपा मुखिया ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए सामाजिक मंच पर कई सवाल उठाए। उन्होंने मुख्यमंत्री के अतीत, राजनीतिक सफर और उत्तराधिकार से जुड़े मुद्दों को लेकर निशाना साधा। उन्होंने अपने एक्स अकाउंट से लिखा- विज्ञान कहता है कि किशोरावस्था में किया गया वनस्पति का अत्यधिक सेवन व्यक्ति के बोलने और समझने की क्षमता को प्रभावित करता है।

वहीं, मनोविज्ञान कहता है कि बचपन और किशोरावस्था के अनुभव व्यक्ति की भाषा, व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते हैं। वही संस्कार आगे चलकर सार्वजनिक जीवन में भी झलकते हैं। सीएम के करप्ट माउथ होने की वजह शायद यही है। जिन्हें सीएम का इतिहास नहीं पता, उनके लिए यह दबाई गई जानकारी है।

डग्गामार वाहन चलवाते समय सीखी अभद्र भाषा

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, 1994 के आसपास अजय सिंह बिष्ट अपने पारिवारिक परिवहन व्यवसाय में सहयोग कर रहे थे। उस समय उनके पास तीन बसें और एक ट्रक था। संभवतः उन्होंने यह भाषिक अभद्रता उसी दौर में, डग्गामार वाहन चलवाते समय सीखी। अजय सिंह बिष्ट के पिता आनंद सिंह बिष्ट और गोरखनाथ मठ के पूर्व महंत अवैद्यनाथ जी यानी कृपाल सिंह बिष्ट जी, रिश्ते में भाई बताए जाते हैं। कहा जाता है कि बाद में उनके चाचा ने ही उन्हें मठ में बुलाया। महंत अवैद्यनाथ जी ने अपने भतीजे अजय सिंह बिष्ट को कुछ ही वर्षों में मठ का उत्तराधिकारी बना दिया।

मठ के उत्तराधिकारी बनने पर भी उठाया सवाल

उत्तराधिकारी के रूप में उन्हीं को क्यों चुना गया? क्या यह केवल योग्यता का निर्णय था या रिश्तेदारी का भी प्रभाव था? पहले मठ की गद्दी मिली, फिर कुछ ही वर्षों में लोकसभा की सीट भी। स्पष्ट किया जाए कि मठ में महंत चुनने के लिए क्या कोई औपचारिक चुनाव प्रक्रिया हुई थी? डग्गामार वाहन चलवाने वाला व्यक्ति क्या 4 वर्षों में ही इतना योग्य हो गया? यदि नहीं, तो क्या इसे 'पक्षपाती परिवारवाद' नहीं कहा जाना चाहिए? और अंत में- पद और परिधान रिश्तों और समय की मदद से मिल सकते हैं, पर भाषा और व्यवहार नहीं।

योगी का ये था बयान

दरअसल, विश्व पर्यावरण दिवस 26 के अवसर पर मंच से संबोधित करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने बिना किसी का नाम लिए सियासी चुटकी ली थी। सीएम योगी ने कहा था, हम हर घर नल जल योजना को आगे बढ़ा रहे हैं, कोई टोंटी चोरी कर ले रहा है। कोई टोंटी खुली छोड़ दे रहा है। जलस्रोतों को नुकसान पहुंचाने वाले भूमाफिया, वन माफिया, खनन माफिया व स्मगलरों के प्रति सजग रहें। कोई पानी बर्बाद कर रहा है, तो ऐसे लोगों को टोकें। जल संरक्षण को जीवन का हिस्सा बनाएं। यह बयान देते हुए मुख्यमंत्री मंद-मंद मुस्कुराते भी नजर आए थे, जिसे वहां मौजूद लोगों और राजनीतिक विश्लेषकों ने तुरंत सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर लगे पुराने टोटी चोरी के आरोपों से जोड़कर देखना शुरू कर दिया।

सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने एनडीए को घेरा

समाजवादी पार्टी सांसद अवधेश प्रसाद का बड़ा दावा सामने आया है। सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने एनडीए पर निशाना साधते हुए कहा कि इंडिया ब्लॉक एक बड़े काम के लिए बनाया गया है। आने वाले दिनों में जल्द ही कई मुद्दों को लेकर बैठक होने वाली है, जिसमें कई फैसले लिए जा सकते है। सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि देश से बेरोजगारी हटाने, चीन से हमारी जमीन वापस लाने, देश के सम्मान को सुरक्षित रखने सहित कई मुद्दों को लेकर गठबंधन का गठन किया गया है। देश से अब एनडीए को हटाना होगा, जिससे देश में शांति बनी रहे।अवधेश प्रसाद ने कहा कि हमारे गठबंधन में सभी बड़े नेता हैं। सब लोग मिलकर काम कर रहे हैं, जिससे देश की प्रगति हो सके। जिस

तरह से भाजपा के राज में डीजल, पेट्रोल के दाम बढ़ रहे हैं, उससे देश में महंगाई चरम पर पहुंच गई है। जनता की समस्या सुनने वाला कोई नहीं है। इससे जनता परेशान हो गई है। वो दिन दूर नहीं जब जनता इनको सत्ता में हटा देगी। सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि जनता के बारे में सरकार कभी नहीं सोचती है। जनता इसका जल्द ही जवाब देगी। उन्होंने कहा कि आज देश में कानून का राज खत्म हो गया है। इसको फिर से लाना पड़ेगा। देश में भ्रम भी नहीं फैलना चाहिए, लेकिन भाजपा के लोग इसमें सबसे आगे हो गए हैं, लेकिन उनको ये नहीं पता कि इससे कुछ होने वाला नही है, जनता जागरूक हो चुकी है। अब एनडीए के जाने का समय आ गया है।

देशभर में लाया जाएगा नगीना मॉडल : चंद्रशेखर

» यूपी विधानसभा चुनाव से पहले नगीना सांसद ने बनाई रणनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की नगीना सीट से सांसद और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के संस्थापक और राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने कहा है कि आजाद पार्टी की कोर कमेटी ने तय किया है कि दो साल पहले लोकसभा चुनाव के परिणाम आए थे और इस दिन को व्यवस्था परिवर्तन दिवस के रूप में मनाएंगे। चंद्रशेखर आजाद ने कहा है कि आज के दिन ही हमारे आंदोलन को मजबूती मिली थी।

उन्होंने कहा कि जिस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुजरात मॉडल लेकर आए थे, उसी तरह आजाद समाज पार्टी पूरे उत्तर प्रदेश और देश में नगीना मॉडल लेकर जाएंगे. अगर कमजोर वर्ग के लोग इकट्ठा हो जाए, तो सत्ता को उखाड़ फेंकना कोई बड़ी बात नहीं है। चंद्रशेखर आजाद ने कहा है कि आज 4 जून से हम लोग सत्ता परिवर्तन यात्रा शुरू कर रहे हैं, यह यात्रा बिजनौर शुरू होकर मेरठ, शामली और अगले फेज में पूरे प्रदेश में जाएगी। उन्होंने यह भी बताया है कि नगीना की जनता के आशीर्वाद सभा इंदिरा भवन में रखी गई है। चंद्रशेखर आजाद ने खुद को पुलिस द्वारा हाउस अरेस्ट किए जाने पर कहा कि हम लोग संवैधानिक लोग हैं, अगर कोई ऐसी स्थिति होगी तो उसका संवैधानिक रास्ता निकालेंगे. उन्होंने कहा कि, पुलिस जनता की सुरक्षा के लिए है, अगर पुलिस सरकार के इशारे पर धमकाने का काम करेगी तो इसका हल भी बात कर निकालेंगे।

सत्ता परिवर्तन यात्रा को परमिशन न मिलने पर भड़के

सत्ता परिवर्तन यात्रा के परमिशन को लेकर उन्होंने कहा है कि हम मुख्यालय जा रहे हैं, अधिकारियों से बैठकर बातचीत करेंगे. हालांकि, उन्होंने यह भी कहा है कि हमने सत्ता परिवर्तन यात्रा के लिए परमिशन मांगी है लेकिन अभी नहीं मिली है. उन्होंने कहा कि अगर सरकार मुझे मेरे लोगों के बीच जाने नहीं देगी और हमे अपनी बात नहीं रखने देगी तो हम लोकतंत्र की हत्या को बर्दाश्त नहीं करेंगे. उन्होंने यात्रा को परमिशन नहीं दिए जाने पर सरकार पर निशाना साधा है।

भाजपा सरकार पर लगाया भेदभाव का आरोप

उन्होंने सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि सत्ता अपने विधायकों और सांसदों को 5 करोड़ रुपये देती है लेकिन 1 करोड़ की बात करते हैं. यह जो भेदभाव किया जा रहा है जनता सब देख रही है. उन्होंने कहा कि मैं लोगों को न्याय दिलाने के लिए जाता हूं तो पुलिस मुझे रोक लेती है. हालांकि, उन्होंने कहा कि इसमें पुलिस का कोई दोष नहीं है, पुलिस सरकार के इशारों पर काम रही ।

जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा न मिलना चिंता की बात : मायावती

» बसपा ने हिमाचल और जम्मू-कश्मीर संगठन की समीक्षा की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ ।पार्टी प्रमुख मायावती ने अपने संगठन को मजबूती देने के लिए कमर कसना शुरू कर दिया है। इसी के तहत हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर इकाइयों की समीक्षा बैठक में संगठन विस्तार और चुनावी तैयारी पर जोर दिया। उन्होंने बहुजन समाज को एकजुट करने का आह्वान किया। बैठक में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा न मिलने पर चिंता जताई गई तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों पर चर्चा हुई।

बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं दिए जाने का मुद्दा उठाया। उन्होंने शुक्रवार को हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर राज्यों के पार्टी संगठन के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि पार्टी के जनाधार को सर्वसमाज में बढ़ाने आदि के लिए आगे और भी अधिक तन, मन, धन से मुस्तैदी के साथ काम किया जाए। चुनावी सफलताओं को भी पूरा महत्व देकर काम करना जरूरी है।

समीक्षा के दौरान जम्मू-कश्मीर के पदाधिकारियों ने बताया कि लोगों को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने का इंतजार है। इस वादे के लंबित रहने से अब यह दुखदायी होता जा रहा है, क्योंकि सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ इससे पूरे क्षेत्र में अपेक्षित मानव एवं क्षेत्रीय विकास सही से नहीं हो पा रहा है। लोगों का जीवन लगातार आशंकाओं में घिरा है। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि देश के अन्य राज्यों की तरह हिमाचल व जम्मू-कश्मीर में भी सर्वसमाज में से ख़ासकर बहुजन समाज के लोगों के सामने गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा व पिछड़ेपन आदि का बोझिल जीवन बना हुआ है।

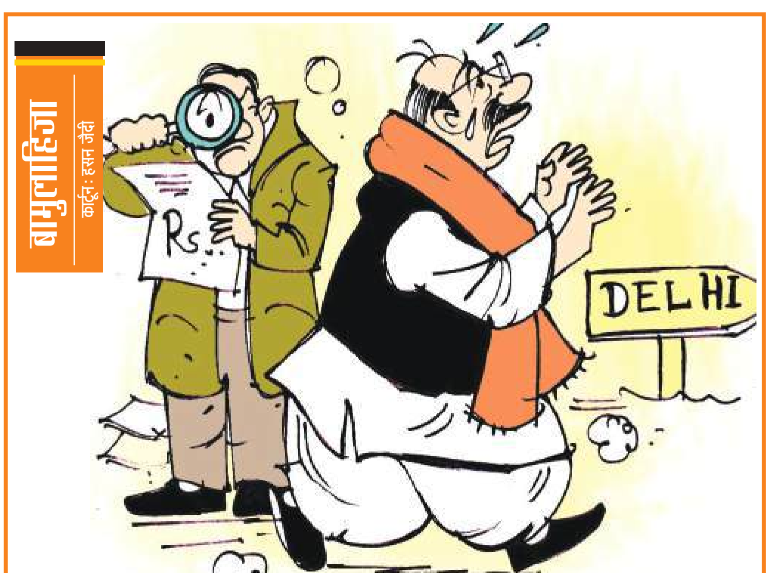

अब मोदी सरकार नहीं चलेगी : सीपी राय

बोले कांग्रेस नेता- भारत के नौजवानों की आकांक्षाओं के साथ बार-बार खिलवाड़ अब बर्दाश्त नहीं होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन डॉ0 सीपी राय, पूर्व मंत्री ने कहा है कि नीट यू0जी0 26 परीक्षा में हुए पेपर लीक के कारण लाखों छात्रों के सपने चूर-चूर हो गए। 22 लाख से ज्यादा नौजवानों ने सालों मेहनत की, रात-दिन की पढ़ाई की और परिवार की कुर्बानियों के बाद इस परीक्षा को दिया, लेकिन शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की नाकामी और लापरवाही ने पूरे सिस्टम को भ्रष्ट कर दिया। नतीजतन कई मासूम नौजवानों ने हताशा में आत्महत्या कर लिया।

डॉ0 राय ने कहा कि आकांक्षा चतुर्वेदी जैसी बेटी, जो किसान पिता की आंखों का तारा थी, प्रदीप मेघवाल, रितिक मिश्रा और अन्य युवा सपनों को लेकर दुनिया से चले गए। इन युवा मौतों की जिम्मेदारी सीधे धर्मेंद्र प्रधान पर है, जिनके मंत्रालय ने एन0टी0ए0 को बार-बार फेल होने दिया है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि ये नौजवानों की जिंदगी बर्बाद करने वाले मंत्री अब भी बेशर्मी से कुर्सी पर बैठे हैं।

डॉ0 राय ने कहा कि सवाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से है कि आप धर्मेंद्र प्रधान को क्यों बचा रहे हैं? क्या एक मंत्री की कुर्सी नौजवानों की जिंदगियों से ज्यादा कीमती है? क्या इन युवा मौतों की नैतिक जिम्मेदारी लेने की हिम्मत भी नहीं है? धर्मेंद्र प्रधान को तुरंत नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए खुद इस्तीफा देना चाहिए, न कि प्रधानमंत्री उन्हें बचाने की कोशिश करें। डॉ0 राय ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी तब तक चुप नहीं बैठेगी जब तक धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा नहीं देते और एनटीए को पूरी तरह भंग कर नया, पारदर्शी सिस्टम नहीं बनाया जाता। मोदी जी, युवा भारत आपसे जवाब मांग रहा है। जवाब इस बात का भी मांग रहा है कि भाजपा सरकार में इतने पेपर लीक ही क्यों होते हैं ?

कांग्रेस ने यूपी में अपनाया आक्रामक रणनीति

राज्य के हर मुद्दे पर भाजपा पर हमले की तैयारी

» विस चुनाव-27 से पहले जन-जन तक पहुंचना चाहती है देश की सबसे पुरानी पार्टी

» कांग्रेस अध्यक्ष ने योगी सरकार पर किया तीखा हमला

» यूपी में पुलिस उत्पीड़न की घटनाएं चरम पर : अजय राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जैसे-जैसे यूपी में विस चुनाव-27 करीब आते जा रहे हैं वैसे यहां के सियासी दल अपने को आक्रामक करते जा रहे हैं। सत्ता दल से जुड़ी पार्टियां जहां विपक्ष को घेर रही है। वही विपक्ष के सभी बड़े दल चाहे वो सपा, बसपा व कांग्रेस हो सभी बीजेपी सरकार पर हमलावर हैं। सब विस से लकर सड़क तक संघर्ष कर रहे हैं। सपा की तरह कांग्रेस ने अपने तेवर और कड़े कर दिए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय हर मुद्दे पर भाजपा को घेर रहे हैं।

यूपी कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय ने योगी सरकार पर तीखा हमला किया। उन्होंने ने राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस नेता केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर उत्तर प्रदेश में हत्या, बलात्कार, संगठित अपराध, रंगदारी, मादक पदार्थ तस्करी, पुलिस उत्पीड़न एवं कानून व्यवस्था की निरंतर बिगड़ती स्थिति के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय हस्तक्षेप एवं जवाबदेही सुनिश्चित किये जाने की मांग की है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने पत्र में लिखा है कि यूपी सरकार विगत कई वर्षों से अपराधमुक्त प्रदेश, कानून का राज तथा अपराधियों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई के दावे करती रही है।

पुलिस मुठभेड़ों पर भी दागे सवाल

पुलिस मुठभेड़ों (एनकाउंटरों) को भी कानून व्यवस्था की सफलता के प्रमुख सूचना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 26 के केवल प्रथम पांच माह में ही 23 अपराधियों के पुलिस मुठभेड़ों में मारे जाने का दावा किया गया है। इतना ही नहीं मई 26 में मात्र दो दिनों (6 एवं 7 मई) के भीतर प्रदेश में 35 पुलिस मुठभेड़ों की सूचना सार्वजनिक की गयी है। अत्यंत चिंताजनक है कि इन दावों के समानांतर प्रदेश के विभिन्न मंडलों से हत्या, सामूहिक दुष्कर्म, बाल अपराध, रंगदारी, संगठित अपराध, मादक पदार्थ तस्करी, मानव तस्करी तथा प्रशासनिक विफलताओं की गंभीर घटनाएं सामने आ रही हैं। गाजियाबाद, लखनऊ, फिरोजाबाद, बहराइच, हमीरपुर, महोबा, गाजीपुर, वाराणसी, आगरा, सहारनपुर, हापुड़ एवं फतेहपुर सहित अनेक जनपदों में जिस प्रकार की घटनाएं हुई हैं उसने केवल कानून व्यवस्था ही नहीं बल्कि प्रशासनिक जवाबदेही और शासन की प्राथमिकताओं पर भी गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं।

महिला सुरक्षा की स्थिति बहुत ही चिंताजनक

महिला सुरक्षा की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है लखनऊ में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म, महोबा में नीट की तैयारी कर रही युवती के अपहरण,

दीर्घकालिक बंधक तथा उसके साथ कथित रूप से कई दिनों तक किए गए यौन शोषण, वाराणसी, चंदौली में नाबालिक बालिका की खरीद फरोख्त एवं यौन शोषण, गाजीपुर में दलित किशोरी की कथित बलात्कार के बाद हत्या जैसी घटनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि प्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा के सरकारी दावे सिर्फ हवा हवाई हैं।

मामलों की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने पत्र के माध्यम से मांग की है कि वर्ष 26 में प्रदेश के विभिन्न मंडलों में हुई हत्या, बलात्कार, बाल अपराध, रंगदारी, संगठित अपराध एवं मादक पदार्थ तस्करी के मामलों की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। बहुचर्चित कोडी युक्त सिरप कांड की वर्तमान स्थिति, फरार आरोपियों की गिरफ्तारी तथा संभावित संरक्षणकर्ताओं की भूमिका की स्वतंत्र जांच कराई जाए। विनीत राय हत्याकांड की निष्पक्ष एवं समयबद्ध जांच कराकर दोषियों को कठोर दंड दिलाया जाए। सियाराम उपाध्याय मृत्यु प्रकरण में अब तक हुई कार्रवाई की स्थिति सार्वजनिक की जाए तथा दोषियों के विरुद्ध प्रभारी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएं। हमीरपुर पुल दुर्घटना सहित प्रशासनिक लापरवाही से संबंधित मामलों की स्वतंत्र जांच कर दोषियों को दंडित किया जाए। महोबा जनपद में प्रतियोगी परीक्षा व नीट की तैयारी कर रही युवती के अपहरण, दीर्घकालिक अवैध बंधन तथा उसके साथ कथित रूप से कई दिनों तक किए गए यौन उत्पीड़न एवं दुष्कर्म के प्रकरण की उच्च स्तरीय निगरानी में निष्पक्ष जांच कराई जाए तथा पीड़ित परिवार को सुरक्षा एवं न्याय सुनिश्चित किया जाए। प्रदेश में प्रशासनिक कार्रवाई के रूप में अपनाई जा रही तथाकथित बुलडोजर नीति अथवा सम्पत्तियों के ध्वस्तीकरण संबंधी कार्यवाहियों की विधिक एवं संवैधानिक समीक्षा कराई जाए। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने पत्र में लिखा है कि उत्तर प्रदेश की जनता को केवल अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई के दावे नहीं बल्कि भयमुक्त वातावरण, प्रभावी न्याय व्यवस्था, उत्तरदायी प्रशासन तथा कानून के निष्पक्ष शासन की आवश्यकता है। इस अत्यंत गंभीर विषय पर तत्काल संज्ञान लेते हुए आवश्यक हस्तक्षेप करेंगे।

कश्मीर में उठा सियासी बवंडर, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के खिलाफ भी विद्रोह!

नेशनल कान्फ्रेंस सांसद-विधायकों को लेकर नेशनल पार्क रवाना

बीजेपी और पीडीपी का दावा किया है कि जम्मू-कश्मीर सरकार के विधायक, सांसद और मंत्री नाराज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में सियासी बवंडर मचा है। ये बवंडर एक बैठक के जगह को बदलने को लेकर है। दरअसल एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने मंत्रियों, विधायकों और सांसदों के साथ निर्धारित बैठक का स्थान अपने गुपकार स्थित आवास से बदलकर चश्माशाही कर दिया।

सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री आवास गुपकार में एकत्रित हुए मंत्री, विधायक और सांसद बाद में वहां से रवाना हो गए तथा टैम्पो वाहनों के जरिए डाचीगाम क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया, जहां अब

बैठक आयोजित होने की संभावना है। बैठक स्थल में अचानक किए गए इस बदलाव ने राजनीतिक हलकों में उत्सुकता बढ़ा दी है। इस बैठक को

नेशनल कॉन्फ्रेंस में टूट का खतरा : बीजेपी

बीजेपी और पीडीपी ने दावा किया है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायकों, सांसदों और मंत्रियों को लगने लगा है कि उमर अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर के लिए राज्य का दर्जा दिलवाने और राजनीतिक अधिकार बहाल करने की मांग पर बहुत नरम रुख अपना रहे हैं।

सरकार की रणनीति, सुशासन की प्राथमिकताओं और सत्तारूढ़ गठबंधन के प्रतिनिधियों के बीच समन्वय से जुड़े महत्वपूर्ण विचार-विमर्श के रूप में देखा जा रहा है। माना जा रहा है कि बैठक में जम्मू-कश्मीर से जुड़े महत्वपूर्ण प्रशासनिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा होगी। श्रीनगर के बाहरी क्षेत्र स्थित चश्मा शाही-दाचीगाम बेल्ट में जारी इस बैठक से संबंधित अधिक जानकारी की प्रतीक्षा है।

उमर के विधायक और सांसद उनसे नाराज : महबूबा

हालांकि बीजेपी और महबूबा मुफ्ती की पीडीपी ने दावा किया है कि उमर को यह ट्रिप इसलिए प्लान करनी पड़ी, क्यों कि उनके विधायक और सांसद जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा और राजनीतिक अधिकार बहाल करने में हो रही देरी को लेकर असंतोष में हैं। इसीलिए उमर अब्दुल्ला अपने विधायकों, मंत्रियों और सांसदों को दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान के नो-नेटवर्क जोन में ले गए हैं। उनकी पार्टी में टूट का खतरा मंडरा रहा है।

उमर अब्दुल्ला मंत्रियों, सांसदों संग ट्रिप पर निकले

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस पर टूट का खतरा मंडरा रहा है। उमर के सांसद और विधायकों में असंतोष है। इसी वजह से वह अपने विधायकों, मंत्रियों और सांसदों को दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान के नो-नेटवर्क जोन में ले गए हैं, ताकि पार्टी की रणनीति पर चर्चा की जा सके, ये दावा किया है बीजेपी और पीडीपी ने। उनका कहना है कि उमर के ये सभी नेता जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा और राजनीतिक अधिकार बहाल करने में हो रही देरी को लेकर सरकार से नाराज हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

आखिर कब सिस्टम की नींद जगेगी

देश की राजधानी दिल्ली के मालवीय नगर में स्थित होटल में बुधवार की सुबह एक भीषण आग ने तांडव मचाया, जिसमें 21 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई और कई अन्य गंभीर रूप से झुलस गए। आग इतनी भयावह थी कि कई लोगों ने जान बचाने के लिए होटल की ऊपरी मंजिल से छलांग लगाई।

भारत में दो साल के अंदर अग्निकांड से 15 से 20 हजार लोग असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं। सरकारी स्तर पर जांच होती है मुआवजा बंटता है और फिर सब भूल जाया जाता है। हालांकि जो जांच रिर्पोटें आई हैं उसमे इन हादसों का सबसे बड़ा कारण सुरक्षा की मानकों का ध्यान नहीं रखा जाना और अवैध निमार्ण है। बिल्डिंगों के लिए निती निर्धारण करने वाली एजेंसियां या तो ध्यान नहीं देती हैं या भ्रष्टाचार की वजह से नजरअंदाज कर देती हैं। अभी ऐसी ही गोवा के बाद दिल्ली के मालवीय नगर में हुई है जिसमें 21 लोगों की मौत हो गई। अब सवाल यही उठता है कि इसका जिम्मेदार कौन है। और आखिर कब तक मासूम लोगों की मौतें ऐसे ही होती रहेंगे। गर्मी में वैसे भी विद्युत ऊर्जा की खपत में वृद्धि होती है, ज्वलनशील पदार्थों का उपयोग धड़ल्ले से होता है, ऊँची इमारतों और बड़े गोदामों जैसी उच्च घनत्व वाली अवसंरचनाओं का विस्तार होता जाता है पर जिम्मेदार इससे मुंह मोड़ लेते हैं।

देश की राजधानी दिल्ली के मालवीय नगर में स्थित होटल में बुधवार की सुबह एक भीषण आग ने तांडव मचाया, जिसमें 21 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई और कई अन्य गंभीर रूप से झुलस गए। आग इतनी भयावह थी कि कई लोगों ने जान बचाने के लिए होटल की ऊपरी मंजिल से छलांग लगाई। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि मारे गए लोगों में अधिकांश विदेशी नागरिक थे, जो संभवतः इलाज के लिए साकेत स्थित मैक्स अस्पताल आए हुए थे। इस दुखद हादसे के साथ ही होटल के संचालन में गंभीर अनियमितताओं का खुलासा हुआ है। चौंकाने वाली जानकारी के अनुसार, होटल को दिल्ली सरकार से बेड एंड ब्रेकफास्ट योजना के तहत लाइसेंस मिला था, जिसमें केवल छह कमरे बनाने की अनुमति थी। परंतु, होटल में अवैध रूप से 25 कमरे बनाए गए थे, जिनमें से कुछ बेसमेंट में भी थे। इस अवैध निर्माण ने सुरक्षा मानकों को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह इलाका साकेत स्थित एक अस्पताल के करीब होने के कारण यहां कई होटल और रेस्टोरेंट हैं, जहां विदेशी नागरिक इलाज के लिए आते हैं। दिल्ली सरकार की बेड एंड ब्रेकफास्ट योजना के तहत कॉमनवेल्थ गेम्स के समय इस क्षेत्र में 15 होटलों को अनुमति दी गई थी।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

भारतीय भूमि अतिक्रमण मुद्दे पर घिरे बालेन्द्र

पुष्परंजन

गत 27 मार्च को पद संभालने के बाद से प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह ने एक बार भी संघीय संसद को संबोधित नहीं किया था- यहां तक कि अनिवार्य साप्ताहिक प्रश्न-उत्तर सत्रों के दौरान भी नहीं। उनकी चुप्पी तोड़ने और विधायिका के प्रति जवाबदेही दिखाने का दबाव उन पर लगातार बढ़ रहा था। और फिर रविवार को जब बालेन्द्र शाह संसद में बोले, सभी सन्नाटे में आ चुके थे। उन्होंने अपने आलोचकों को शांत करने के बजाय, मानो डंक मारने वाली मधुमक्खियों का एक झुंड ही छोड़ दिया। जिसे अंग्रेजी में 'पैंडोरा बॉक्स खोलना' कहते हैं। संसद में दो अलग-अलग सवालों का जवाब देते हुए, शाह ने सबसे पहले कहा कि कालापानी, लिम्पियाधुरा और लिपुलेख विवाद को सुलझाने के लिए भारत के साथ प्रयास जारी हैं। लेकिन, फिर उन्होंने यह भी जोड़ा कि न केवल भारत ने नेपाली क्षेत्रों पर अतिक्रमण किया है, बल्कि नेपाल ने भी कई जगहों पर भारत की जमीन पर अतिक्रमण किया है।

उन्होंने यह भी कहा कि चूंकि भारत के साथ मौजूदा सीमा विवादों में से कई की जड़ें 1816 में ब्रिटिश भारत के साथ हुई सुगौली संधि में हैं, इसलिए उनकी सरकार भारत-नेपाल सीमा चर्चाओं में ब्रिटिश पक्ष को शामिल करने की कोशिश कर रही है। काठमांडू पोस्ट जैसा अखबार भी इस बयान से हैरान था। अगले दिन के सम्पादकीय में अखबार लिखता है— 'सीमा विशेषज्ञों के साथ-साथ उन वरिष्ठ पूर्व सरकारी अधिकारियों के अनुसार, जिन्होंने अपने भारतीय समकक्षों के साथ बातचीत की है, ऐसा कोई आधिकारिक रिकॉर्ड मौजूद नहीं है, जिसमें भारत ने कभी 'नेपाली अतिक्रमण' का मुद्दा उठाया हो। इसलिए, प्रधानमंत्री का यह बयान भविष्य की सीमा वार्ता में भारत के पक्ष को मजबूत करता है।' कोई राष्ट्रीय अखबार तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश करे, तो यह उभयपक्षीय हितों के लिए अच्छा नहीं है। भारत से यदि भूमि विवाद नहीं होता, तो 'बाउंडरी वर्किंग ग्रुप' का गठन क्यों किया गया? संयुक्त तकनीकी समिति ने लगभग 26 वर्षों तक कार्य किया।

यह दावा किया गया कि सीमा संबंधी 97 प्रतिशत समस्याओं का समाधान कर लिया गया। शेष तीन प्रतिशत का समाधान करना उनकी क्षमता से परे था। उसमें कालापानी-लिम्पियाधुरा शामिल है-जो 370 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल के साथ सबसे बड़ा अतिक्रमण है; इसके अलावा 24 किलोमीटर का सुस्ता क्षेत्र और लगभग

15 किलोमीटर क्षेत्रफल वाले अन्य स्थान भी इसमें हैं। कुल मिलाकर, ऐसे लगभग 71 स्थान हैं जो 606 वर्ग किलोमीटर का कुल क्षेत्रफल घेरते हैं। इस स्थिति के बने रहने के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक, सीमांकन के लिए पुराने मानचित्रों और दस्तावेजों की अनुपलब्धता है। काश! काठमांडू पोस्ट ने बुद्धि नारायण श्रेष्ठ की पुस्तक 'द नेचुरल एनवायरनमेंट्स एंड द शिफ्टिंग बॉर्डर्स ऑफ नेपाल' में बर्नार्डो माइकल द्वारा की गई टिप्पणी पर गौर किया होता, 'आज भी, भारत और नेपाल के बीच सीमा विवादों की उपस्थिति यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि आधुनिक सीमाओं के निर्धारण की यह परियोजना सदैव एक 'अधूरी परियोजना' ही बनी रहेगी।' नेपाल के लिए मुश्किल यह है कि लिपुलेख के मुद्दे पर चीन उसके साथ नहीं खड़ा है। लिपुलेख-लिम्पियाधुरा ट्राइजंक्शन भारत का है, उसकी पुष्टि 15 मई, 2015 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चीन की राजकीय यात्रा के दौरान हुआ व्यापार समझौता है। यह भारत और चीन के बीच एक द्विपक्षीय समझौता था, जिस पर चीनी प्रधानमंत्री ली कछियांग के साथ पीएम मोदी ने हस्ताक्षर किए थे, जिसमें औपचारिक रूप से लिपुलेख दर्रे के माध्यम से सीमा व्यापार पर सहमति बनी थी। 41-सूत्री संयुक्त बयान के बिंदु 28 में लिपुलेख दर्रे (कियांगला) को औपचारिक रूप से एक द्विपक्षीय सीमा व्यापार और तीर्थयात्रा मार्ग के रूप में मान्यता दी गई थी। तब नेपाली कांग्रेस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सुशील कोइराला ने कड़ा विरोध जताते हुए कहा, कि भारत और चीन ने उसकी सहमति के बिना, उसके दावे वाले क्षेत्र से होकर व्यापार करने पर बातचीत की है। नेपाल के तीन प्रधानमंत्रियों केपी शर्मा ओली, प्रचंड और शेर बहादुर देउबा ने लिपुलेख-लिम्पियाधुरा के बॉल को जमकर खेला।

बालेन्द्र शाह से पहले पीएम ओली इस मुद्दे को उठाने 3 सितम्बर, 2025 को पेइचिंग में आहूत थिएनमान चौक विजय दिवस समारोह तक गए लेकिन, चीनी सत्ता प्रतिष्ठान ने उसे अनसुना कर दिया। चीन और भारत तय कर चुके थे कि लिपुलेख-लिम्पियाधुरा ट्राइजंक्शन के बरास्ते जून, 2026 में उभयपक्षीय व्यापार होना है। बहरहाल, प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह ने बर्र के छत्ते में हाथ डाल दिया है। अब तक नेपाल के किसी भी प्रधानमंत्री ने ऐसा बयान संसद में नहीं दिया था कि भारतीय भूमि को उनके देश ने भी कब्जा कर रखा है।

प्रकृति के बदलते मिजाज को लेकर गंभीरता जरूरी

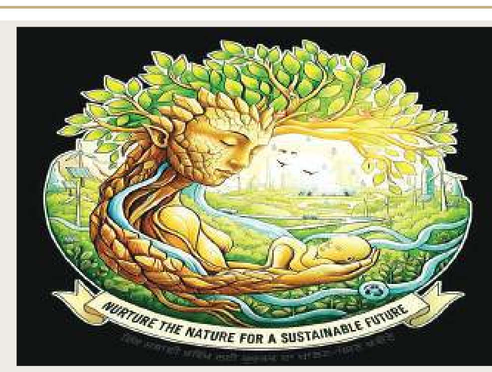

ज्ञानेंद्र रावत

महात्मा गांधी ने वर्ष 1928 में ही उत्पादन और खपत के पश्चिमी मॉडल के चलते वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय असंतुलन की चेतावनी देते हुए कहा था— 'ईश्वर कभी नहीं चाहता कि भारत कभी पश्चिम की तरह औद्योगिकीकरण अपनाए।' साथ ही कहा था कि 'एक छोटे से द्वीप साम्राज्य (इंग्लैंड) के आर्थिक साम्राज्यवाद ने आज दुनिया को जंजीरों से जकड़ रखा है। यदि तीस करोड़ की आबादी वाले देश ने ऐसा आर्थिक शोषण किया तो पूरी दुनिया टिड्डियों की तरह बेकार हो जाएगी।' गांधीजी का मानना था कि देश को आजादी के बाद गरीबी दूर करने और लोगों के सम्मानजनक जीवनयापन की दृष्टि से आर्थिक विकास करना ही होगा। ऐसे में भारत को अपने प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में कहीं अधिक जिम्मेदारी दिखानी होगी और पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाना होगा।

दुखद है कि आजाद भारत की सरकारों ने गांधी के विचारों को पूरी तरह बिसरा दिया। परिणामस्वरूप, जहां मानव जीवन प्रभावित हुआ, वहीं संसाधनों पर कॉर्पोरेट घरानों के कब्जे से ग्रामीण और आदिवासी समाज बेदखली का शिकार हुआ। साथ ही औद्योगिक परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने के कारण प्रदूषण की समस्या ने भयावह रूप ले लिया। इस तबाही के विरोध में देश में चिपको, नर्मदा और मछुआरों के आंदोलन सामने आए। इसके उपरांत देश में पर्यावरण मंत्रालय की स्थापना हुई और पारिस्थितिक नुकसान रोकने के लिए अनेक कानून बने। लेकिन सत्ता पर काबिज विभिन्न सरकारों ने समाज के व्यापक हित के बजाय निजी कॉर्पोरेट घरानों के हितों को सर्वोपरि मानकर उनके आगे झुकना उचित समझा। कॉर्पोरेट घरानों के निजी स्वार्थ के चलते प्रदूषित शहर, भयावह स्तर तक प्रदूषित वातावरण, मरती जीवनदायी नदियां, प्रदूषित जल, प्रदूषित वायु, गिरता भूजल स्तर, खत्म होते जलस्रोत व जंगल, प्रदूषित मिट्टी, बंजर होती जमीन आदि पर्यावरण विनाश और तबाही के स्पष्ट सबूत हैं। इसका सीधा असर मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इसके बावजूद यह सिलसिला बेरोकटोक जारी है।

वैश्विक स्तर पर देखें तो बीस वर्ष पहले हम सालाना आठ अरब मीट्रिक टन कार्बन वायुमंडल में छोड़ रहे थे, जिसका आंकड़ा बढ़कर आज डेढ़ गुणा से भी अधिक हो गया। इसके कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। आज दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा जोरों पर है। प्रकृति का मिजाज बदल रहा है, और इसमें जलवायु परिवर्तन ने अहम भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक का कहना है कि दुनिया में ऊर्जा की जरूरत पूरी करने के लिए कोयला, तेल और गैस का अधिक इस्तेमाल हो रहा है। भारत के संदर्भ में ब्राउन टू ग्रीन रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन रोकने के भारत के प्रयास अभी भी नाकाफी हैं। भारत ने 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की तीव्रता में 33-35 प्रतिशत तक कमी लाने का ऐलान किया था, लेकिन पेरिस समझौते के मुताबिक डेढ़ डिग्री के लक्ष्य के हिसाब से यह पर्याप्त नहीं है। देश को विभिन्न क्षेत्रों के लिए अपने उत्सर्जन लक्ष्य नए सिरे से तय करने की आवश्यकता है, अन्यथा 2095 तक धरती का तापमान चार डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगा। यदि कार्बन उत्सर्जन में कमी न आई तो जल संकट बढ़ेगा, बीमारियां बढ़ेंगी, खाद्यान्न उत्पादन में कमी आएगी, ध्रुवों की बर्फ तेज गति से पिघलेगी, समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ेगा।

नतीजन, दुनिया के कई देश पानी में डूब सकते हैं। समुद्र किनारे बसे सैकड़ों शहर-महानगर जलमग्न होंगे, और लगभग 20 लाख से अधिक प्रजातियां सदा-सदा के लिए खत्म हो जाएंगी। वहीं, सदियों से जीवन के आधार रहे खाद्य पदार्थों के पोषक तत्व कम हो जाएंगे। विशेष रूप से बी-1, बी-2, बी-5 और बी-8 जैसी विटामिनों में कमी आएगी। बीमारियों से बचाने वाले जैव रसायनों में भी कमी आने की संभावना है। यदि पृथ्वी का तापमान और अधिक बढ़ गया तो धरती का एक-चौथाई हिस्सा रेगिस्तान में तब्दील हो जाएगा। वहीं 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे का शिकार होगा। नतीजतन, दुनियाभर में लगभग 150 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित होंगे। जंगलों में आग की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि होगी। इसका सबसे ज्यादा असर भारत समेत दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण यूरोप, मध्य अमेरिका और दक्षिण ऑस्ट्रेलिया पर पड़ेगा।

चौंकाने वाली बात यह कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते पहले बीते चार दशकों में कम हो चुकी उर्वरा शक्ति वाली जमीन की सेहत बिगड़ने की दर अब सौ गुणा बढ़ गई है। उस हालत में भविष्य में दुनिया की आबादी का पेट भरने के लिए अन्य संसाधनों पर निर्भर होना पड़ेगा। आने वाले 24 वर्षों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीका को इस चुनौती का भीषण सामना करना पड़ेगा। इन क्षेत्रों में सदी के अंत तक तापमान 50 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच जाएगा। इसका असर खाद्यान्न, पेयजल और प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ेगा। नतीजन आम आदमी का जीवन मुहाल हो जाएगा। प्रकृति के सारे उतार-चढ़ाव मानवता को संभलने के लिए चेतावनी हैं। पर्यावरण तेजी से बदल रहा है। लेकिन हम लोग इन्हें समझने और गंभीरता से लेने के बजाय नजरअंदाज कर रहे हैं। जरूरत इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास करने की है मसलन, जीवनशैली में बदलाव व प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाना। ताकि पूरी पृथ्वी और मानवता के साथ-साथ इस ग्रह पर रहने वाले तमाम जीव-जंतुओं को विनाश से बचाया जा सके।

प्रोटीन का पावरहाउस है चना

फिट रहेगा शरीर

चना बालों को करे मजबूत

भीगे चने में कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं, जो शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करते हैं। सुबह-सुबह भीगे चने खाने से दिनभर शरीर में ताकत महसूस होती है और थकान भी कम लगती है। यह उन लोगों के लिए भी उपयोगी है जो शारीरिक रूप से अधिक मेहनत करते हैं। इसके अलावा इसमें मौजूद प्रोटीन की मात्रा कोशिकाओं को स्वस्थ रखने, बालों की मजबूती बढ़ाने और अक्सर कमजोरी का शिकार रहने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभकारी हो सकती है। चना प्रोटीन, जिंक और विटामिन बी6 का एक समृद्ध स्रोत है, ये सभी बालों के लिए ज़रूरी हैं। यह जड़ों को पोषण देने और बालों का झड़ना कम करने में मदद करता है, साथ ही बालों को घना बनाता है। इसमें मौजूद मैंगनीज समय से पहले बालों के सफेद होने और पिगमेंटेशन की समस्याओं को रोकने में मदद करता है।

चने खाने से पाचन भी होता है ठीक

भीगे चने में भरपूर मात्रा में फाइबर होता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करता है। यह कब्ज, गैस और एसिडिटी जैसी समस्याओं से राहत दिलाने में भी सहायक है। फाइबर आंतों को साफ रखने और मल को सॉफ्ट बनाने में मदद करता है, जिससे मल त्याग नियमित होता है। इतना ही नहीं फाइबर वाली चीजों को ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रॉल जैसी समस्याओं को नियंत्रित करने में भी लाभकारी पाया गया है। भीगा हुआ काला चना घंटों तक पेट भरा रखता है, जिससे स्नैकिंग और ज़्यादा खाने से बचने में मदद मिलती है। वजन घटाने के लिए ये बेस्ट स्नैक्स है। यह मेटाबॉलिज्म को फ़ास्ट करके फैट बर्न करने में भी मदद करता है। चने में मौजूद प्रोटीन लीन मसल्स बनाने में भी मदद करता है, जो वज़न कम करने में सहायक होता है।

जिम जाने वालों के लिए है अच्छी डाइट

भीगे चने में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन होता है, जो मांसपेशियों के निर्माण और मरम्मत के लिए आवश्यक है। जो लोग जिम जाते हैं या वर्कआउट करते हैं, उनके लिए भीगे चने खाना एक बेहतरीन प्राकृतिक प्रोटीन का स्रोत है। अच्छी फिटनेस चाहते हैं तो भीगे चने को आहार का हिस्सा जरूर बनाएं। चने में कैलोरी की मात्रा कम और प्रोटीन-फाइबर की अधिकता होती है, जिससे पेट लंबे समय तक भरा हुआ महसूस होता है। इससे भूख को नियंत्रित करने और अनावश्यक खान-पान से बचने में भी मदद मिल सकती है जिससे वजन कंट्रोल में रहता है।

आप अपने दैनिक आहार को जितना पौष्टिक और स्वस्थ रखेंगे, शरीर को उतना ही लाभ मिलता है। रोज आहार में हरी सब्जियों-फलों, नट्स और सीड्स को शामिल करना बहुत फायदेमंद हो सकता है। इसके अलावा सुबह भीगे हुए चने का सेवन करके आप प्रोटीन सहित शरीर के लिए जरूरी कई प्रकार के पोषक तत्वों की पूर्ति कर सकते हैं। भीगे चने खाने के कई स्वास्थ्य लाभ हैं। यह एक पौष्टिक खाद्य पदार्थ है जो प्राचीन समय से ही भारतीय आहार परंपरा का हिस्सा रहा है। चने शरीर के अंगों और प्रणालियों के लिए लाभकारी माने जाते हैं। इसे अपनी डाइट में शामिल करके आप स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। शरीर की ऊर्जा को बढ़ाने, मांसपेशियों को मजबूती देने के अलावा इसके नियमित सेवन से कई प्रकार के लाभ हैं।

डायबिटीज में लाभदायक

डायबिटीज में क्या खाएं-क्या नहीं ये बड़ा सवाल रहा है। भीगे चने चूंकि लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले होते है, जो शरीर में शुगर के स्तर को तेजी से बढ़ने नहीं देते हैं। ऐसे में मधुमेह के शिकार लोगों के लिए नियमित रूप से भीगे चने का सेवन करना विशेष लाभकारी हो सकता है। भीगे चने में एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करते हैं। इससे दिल की बीमारियों से भी बचा जा है। यह भूख को भी कम करता है और ज्यादा देर तक पेट भरा रखता है, जिससे ब्लड शुगर में अचानक बढ़ोतरी नहीं होती। यह इंसुलिन सेंसिटिविटी को बेहतर बनाने और बेहतर ग्लूकोज मेटाबॉलिज्म में मदद करता है। यह ब्लड प्रेशर को भी नियंत्रित करने में मददगार होता है। इसके अलावा इसे सुबह खाने से हीमोग्लोबिन बढ़ाने में मदद मिलती है, जिससे यह एनीमिया या कम ऊर्जा वाले लोगों के लिए आदर्श है।

हंसना मना है

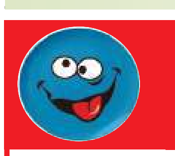

कुछ दोस्त ऐसे हैं जो घर से बीवी की लात खाकर आते हैं और दोस्तों से कहते फिरते हैं आज तो मैं लेग पीस खाकर आया हूं।

आदित्य अपनी गर्लफ्रेंड के पिता से मिलने गया, लड़की का पिता: मैं नहीं चाहता कि मेरी बेटी अपनी पूरी जिंदगी एक मूर्ख इंसान के साथ गुजारे। आदित्य: बस अंकल, इसीलिए तो मैं उसे यहां से ले जाने आया हूं। दे जूते। दे चप्पल !

रुपेश : पापा मुझे एक लड़की पसंद है, मैं उससे शादी करना चाहता हूं। पापा: क्या वो भी तुझे पसन्द करती है? रुपेश: हां जी हां। पापा: जिस लड़की की पसन्द ऐसी हो मैं उसे अपनी बहू नहीं बना सकता।

सरदार दुखी था। किसी ने पुछा: क्यों टेंशन में हो? सरदार: यार एक दोस्त को प्लास्टिक सर्जरी के लिए 2 लाख दिए, अब साले को पहचान नहीं पा रहा हूं।

पापा और 15 साल का बेटा एक होटल में गए, पापा -वेटर एक बियर और एक आईसक्रीम लाओ, बेटा-आईसक्रीम क्यों पापा, आप भी बियर लीजिये ना, दे.. चप्पल... पे... चप्पल!

पापा: नालायक, तुमने अपनी मम्मी से ऊंची आवाज में बात क्यों की? बेटा: मुझे पता है पापा आपको जलन हो रही है क्योंकि आप ऐसा नहीं कर सकते।

कहानी | ज्ञान का सार्थक प्रयोग

एक ब्राह्मण के चार पुत्र थे। उनमें परस्पर गहरी मित्रता थी। चारों में से तीन शास्त्रों में पारंगत थे, लेकिन उनमें बुद्धि का अभाव था। चौथे ने शास्त्रों का अध्ययन तो नहीं किया था, लेकिन वह था बड़ा बुद्धिमान। एक बार चारों भाइयों ने परदेश जाकर अपनी-अपनी विद्या के प्रभाव से धन अर्जित करने का विचार किया। चारों पूर्व के देश की ओर चल पड़े। रास्ते में सबसे बड़े भाई ने कहा - हमारा चौथा भाई तो निरा अनपढ़ है। राजा सदा विद्वान व्यक्ति का ही सत्कार करते हैं। केवल बुद्धि से तो कुछ मिलता नहीं। विद्या के बल पर हम जो धन कमाएंगे, उसमें से इसे कुछ नहीं देंगे। अच्छा तो यही है कि यह घर वापस चला जाए। दूसरे भाई का विचार भी यही था। किंतु तीसरे भाई ने उनका विरोध किया। वह बोला - हम बचपन से एक साथ रहे हैं, इसलिए इसको अकेले छोड़ना उचित नहीं है। हम अपनी कमाई का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा इसे भी दे दिया करेंगे। अतः चौथा भाई भी उनके साथ लगा रहा। रास्ते में एक घना जंगल पड़ा। वहां एक जगह हड्डियों का पंजर था। उसे देखकर उन्होंने अपनी-अपनी विद्या की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उनमें से एक ने हड्डियों को सही ढंग से एक स्थान पर एकत्रित कर दिया। वास्तव में ये हड्डियां एक मरे हुए शेर की थीं। दूसरे ने बड़े कौशल से हड्डियों के पंजर पर मांस एवं खाल का अवरण चढ़ा दिया। उनमें उसमें रक्त का संचार भी कर दिया। तीसरा उसमें प्राण डालकर उसे जीवित करने ही वाला था कि चौथे भाई ने उसको रोकते हुए कहा, 'तुमने अपनी विद्या से यदि इसे जीवित कर दिया तो यह हम सभी को जान से मार देगा।' तीसरे भाई ने कहा - तू तो मूर्ख है! मैं अपनी विद्या का प्रयोग अवश्य करुंगा और उसका फल भी देखूंगा।' चौथे भाई ने कहा, 'तो फिर थोड़ी देर रुको। मैं इस पेड़ पर चढ़ जाऊं, तब तुम अपनी विद्या का चमत्कार दिखाना।' यह कहकर चौथा भाई पेड़ पर चढ़ गया। तीसरे भाई ने अपनी विद्या के बल पर जैसे ही शेर में प्राणों का संचार किया, शेर तड़पकर उठा और उन पर टूट पड़ा। उसने पलक झपकते ही तीनों अभिमानी विद्वानों को मार डाला और गरजता हुआ चला गया। उसके दूर चले जाने पर चौथा भाई पेड़ से उतरकर रोता हुआ घर लौट आया। इसीलिए कहा गया है कि विद्या से बुद्धि श्रेष्ठ होती है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष: कार्यप्रणाली में सुधार होगा। तत्काल लाभ नहीं होगा। बिगड़े काम बनेंगे। निवेश मनोनुकूल लाभ देगा। नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। कोई पुराना रोग बाधा का कारण हो सकता है।

वृषभ: लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। निवेश लाभ देगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। जल्दबाजी से हानि संभव है।

मिथुन: आज घरेलू काम में गृहिणियां लापरवाही न करें। आवश्यक वस्तुएं गुम हो सकती हैं। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे।

कर्क: व्यापार में वृद्धि होगी। स्त्री वर्ग से समयानुकूल सहायता प्राप्त होगी। नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। निवेश शुभ रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह: स्थायी संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। मनपसंद रोजगार मिलेगा। बैंक-बैलेंस बढ़ेगा। नौकरी में चैन रहेगा। व्यापार में वृद्धि के योग हैं।

कन्या: किसी मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठा पाएंगे। यात्रा लाभदायक रहेगी। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। लेन-देन में सावधानी रखें।

तुला: आय में निश्चितता रहेगी। शत्रु शांत रहेंगे। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें। दौड़धूप की अधिकता का स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा।

वृश्चिक: निवेश से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेंगे। आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से खिन्नता रहेगी। बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

धनु: व्यापार मनोनुकूल चलेगा। नौकरी में सहकर्मी सहयोग करेंगे। लाभ होगा। जल्दबाजी व लापरवाही से हानि होगी। राजकीय कोप भुगतना पड़ सकता है। विवाद न करें।

मकर: कारोबार में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट मनोनुकूल लाभ देगा। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। रोजगार मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। बुद्धि का प्रयोग करें।

कुम्भ: आय बनी रहेगी। नौकरी में कार्यभार रहेगा। थकान महसूस होगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें। व्यवसाय की गति धीमी रहेगी।

मीन: बुद्धि का प्रयोग करें। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा मनोनुकूल रहेगी। कारोबार से संतुष्टि रहेगी। प्रमाद न करें। निवेश से लाभ होगा।

हालीवुड | रिलीज डेट

दोस्त की मौत के बाद दीपिका ने मेंटल हेल्थ पर बात करने का लिया फैसला : प्रकाश

दीपिका पादुकोण डिप्रेशन जैसी मानसिक समस्या को लेकर बहुत गंभीर हैं। वह लोगों को मेंटल हेल्थ पर बात करने के लिए मोटिवेट करती हैं। खुद भी एक लंबा वक्त उन्होंने डिप्रेशन से जूझते हुए गुजारा है। एक हालिया इंटरव्यू में दीपिका पादुकोण के पिता ने भी एक्ट्रेस की मेंटल हेल्थ की समस्या पर बात की। साथ ही एक्ट्रेस की उस पहल को सराहा, जिसके जरिए वह डिप्रेशन को लेकर अवेयरनेस फैला रही हैं। रोड्रिगो कैनेलास के शो द समथिंग बिगर शो में दीपिका पादुकोण के पिता प्रकाश पादुकोण ने दीपिका की मेंटल हेल्थ प्रॉब्लम का जिक्र किया। वह बताते हैं कि जब बेटी ने अपनी मेंटल हेल्थ से जुड़ी मुश्किलों के बारे में सबके सामने बात करने का फैसला किया, तो उन्होंने और पत्नी उज्जला पादुकोण ने दीपिका को पूरा सपोर्ट किया। प्रकाश पादुकोण कहते हैं, 'अगर इससे दूसरों की मदद हो रही थी, तो हमें इस बात को लेकर कोई दिक्कत नहीं थी, क्योंकि दीपिका ऐसी स्थिति में थी कि लोगों की मदद कर सकती थी। मुझे लगता है कि उन्हें यह बात समझ आ गई थी, इसलिए वह आगे आईं और इस बारे (डिप्रेशन) में बात की।' प्रकाश पादुकोण ने यह भी बताया कि दीपिका ने डिप्रेशन पर बात करने का फैसला अपनी एक दोस्त की मौत के बाद लिया। वह इंटरव्यू में कहते हैं, 'दीपिका की एक दोस्त की मौत हुई और तभी बेटी ने तय किया कि कुछ ऐसा किया जाना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग मेंटल हेल्थ को लेकर जागरूक हों। तभी दीपिका ने अपनी फाउंडेशन के बारे में सोचना शुरू किया। बता दें कि दीपिका मेंटल हेल्थ को लेकर अवेयरनेस फैलाती हैं, इसके लिए उन्होंने अपनी एक फाउंडेशन बनाई है।

'है जवानी तो इश्क होना है' किसी को लगी धांसू तो किसी ने नकारा

बॉलीवुड | रिव्यू

डेविड धवन रोमांटिक-कॉमेडी फिल्में बनाने के लिए मशहूर रहे हैं। उनकी ऐसी फिल्मों ने 90 के दशकों का खूब मनोरंजन किया है। इसी अंदाज के साथ उन्होंने बेटे वरुण धवन को लेकर फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' बनाई।

फिल्म 'है जवानी तो इश्क होना है' को लेकर एक यूजर्स ने ट्वीट करते हुए लिखा, 'यह एक आम रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म है, ऐसी फिल्में हमने पहले भी कई बार देखी हैं। इसकी कहानी इंटरवल के बाद शुरू होती है, लेकिन अब तक इसमें नयापन और मौलिकता की कमी खलती रहती है।'

एक अन्य यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'इस फिल्म का आइडिया 1984 की फिल्म मिकी एंड मॉड से लिया गया है। वरुण धवन ने अपना किरदार बहुत जबरदस्त एनर्जी के साथ निभाया है। वरुण धवन, पूजा हेगड़े और मृणाल ठाकुर की फिल्म थिएटर में जोरदार हंसी और पुरानी यादों का अहसास कराती है।

फोटोग्राफर जस्स (वरुण धवन) की है, जिसकी पत्नी बानी (मृणाल ठाकुर) उससे इसलिए तलाक लेना चाहती है क्योंकि वो बच्चा चाहता है। बानी इसके लिए तैयार नहीं है। बानी अलग होते वक्त जस्स से मूव ऑन करने के लिए कहती है। फिर जस्स की जिंदगी में प्रीत (पूजा हेगड़े) आती है। कुछ महीनों बाद बानी को पता चलता है कि वो प्रेग्नेंट है तो वो जस्स के पास लौट आती है। दूसरी तरफ प्रीत भी प्रेग्नेंट हो जाती है। यही सिचुएशन पूरी फिल्म में कॉमेडी का माहौल बनाने की कोशिश करती है।

विवादों में अंगूरी भाभी, इंटरनेट पर शिल्पा के खिलाफ उठी कड़ी सजा की मांग

भाभी जी घर पर हैं फेम शिल्पा शिंदे विवादों में आ गई हैं। एक्ट्रेस ने बताया कि 11 साल पहले उन्होंने प्रोड्यूसर पर झूठा यौन शोषण का केस किया था। शिल्पा ने ये खुलासा भारती सिंह और हर्ष लिंबाचिया के पॉडकास्ट पर किया। शिल्पा का ये वीडियो देखते ही देखते वायरल हो गया। खुलासे को लेकर सेलेब्स भी शिल्पा को खरी खोटी सुना रहे हैं। इंटरनेट पर शिल्पा के खिलाफ कड़ी सजा की मांग की जा रही है।

शिल्पा का कहना है कि वो 11 साल से झूठ का बोझ लेकर चल रही थीं। वो इस बोझ के साथ नहीं जी सकती थीं।

इसलिए उन्होंने सच कुबूला। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुनिया उनके बारे में क्या सोच रही है। विवादों के बीच उन्होंने इंस्टाग्राम पर श्री कृष्णा का मोटिवेशनल पोस्ट शेयर किया है।

ट्रोलिंग के बीच शिल्पा शिंदे इंस्टाग्राम पर एक्टिव हैं। वो हर घंटे वीडियो और पोस्ट करके मामले पर अपनी सफाई दे रही हैं। उन्होंने नया पोस्ट शेयर किया है। ये पोस्ट भगवान श्री कृष्ण के विचारों से प्रेरित है। पोस्ट में कहा गया कि कृष्ण कहते हैं कि न्याय तुरंत नहीं मिलता। लेकिन कर्म कभी चूकता नहीं है, जो तुम्हारे साथ गलत करता है। वो तुम्हें नहीं अपने कर्म को बिगाड़ रहा होता है। तुम बदला मत लो, शांत रहो। क्योंकि समय और कर्म दोनों बहुत अच्छा हिसाब रखते हैं।

अर्जुन ने भी पूछा था कि जो गलत करे उसका क्या। कृष्ण मुस्कुराए और बोले कि जो जैसे करेगा। वैसा ही पाएगा। इसलिए सही रहो। सच्चे रहो, बाकि न्याय पर छोड़ दो। पोस्ट शेयर करते हुए उन्होंने हाथ जोड़ने वाला इमोजी भी बनाया।

शिल्पा के खुलासे के बाद हिना खान ने इंस्टाग्राम पोस्ट में उनके खिलाफ सजा की मांग की थी। हिना की पोस्ट का जवाब देते हुए शिल्पा ने कहा कि मेरे नाम से टीआरपी लेना बंद करो। टीआरपी के लिए आपकी बीमारी है। इसके बाद हिना ने एक पोस्ट में शिल्पा पर तंज कसते हुए देश के प्रधानमंत्री से सारे कैदियों को बाहर निकालने की अपील की।

शिल्पा और हिना के बीच अलग ही बिग बॉस शुरू हो गया। पर हिना के अलावा भी बहुत सारे सेलेब्स उनके खिलाफ खड़े दिख रहे हैं। बड़ी बात ये है कि भाभी जी घर पर हैं शो के सारे लोग इस विवाद पर चुप्पी बनाए हुए हैं।

अजब-गजब

बेहद रोमांचक है दूधिया मालदा की कहानी!

वो आम का पेड़ जिसकी होती थी दूध से सिंचाई

गर्मियों का मौसम आते ही बाजार आमों से भर जाता है। लेकिन कुछ आम सिर्फ स्वाद के लिए नहीं, बल्कि अपनी अनोखी कहानी के लिए याद किए जाते हैं। इन्हीं में से एक है बिहार का प्रसिद्ध 'दूधिया मालदा'। यह आम ना सिर्फ अपने दूधिया रंग और बेहतरीन स्वाद के लिए मशहूर है बल्कि इसकी खेती का तरीका भी बेहद अनोखा है। कहा जाता है कि दूधिया मालदा आम के पेड़ों को नियमित रूप से दूध से सिंचाई की जाती थी। किसान पेड़ की जड़ों में दूध डालते थे, जिससे आम की खुशबू, मीठास और रंग दूधिया सफेद हो जाता था। इस खास तरीके से उगाए गए आम का स्वाद इतना अनोखा होता था कि एक बार चखने वाले दोबारा नहीं भूल पाते थे। इस आम को उगाने में राजाओं का नाम भी शामिल है। साथ ही इस आम की कहानी को और रोचक बनाने वाला नाम है महान अभिनेता राज कपूर का। कहते हैं कि साल 1952 में राज कपूर मुंबई से दीघा (बिहार) तक सिर्फ दूधिया मालदा आम लेने के लिए आए थे। उन्होंने वहां से पूरे कार्टन भरकर आम मुंबई ले जाकर अपने परिवार और दोस्तों को खिलाए थे। इतने साल बाद भी यह कहानी लोगों के बीच चर्चित है। दूधिया मालदा की शोहरत सिर्फ भारत तक सीमित नहीं रही है। वर्ष 1997 में सिंगापुर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय आम प्रदर्शनी में दुनिया भर के आमों के बीच बिहार के इस दूधिया मालदा ने पहला स्थान हासिल किया था। स्वाद, खुशबू, रंग और समग्र गुणवत्ता के आधार पर इसे

विश्व का सर्वश्रेष्ठ आम चुना गया था। यह बिहार की मिट्टी और किसानों की मेहनत का कमाल था। लेकिन अफसोस की बात यह है कि आज यह दुर्लभ आम लगभग लुप्त होने की कगार पर पहुंच गया है। दीघा इलाके में पहले सैकड़ों पेड़ थे, लेकिन अब मात्र 100 पेड़ ही बचे हैं। इस आम को प्रसिद्ध बनाने वाले किसान मोहम्मद इरफान की मृत्यु के बाद उनके बेटे इस बाग को संभाल नहीं पाए। आज उनके बाग की जगह पर एक कॉलेज कैंपस बन चुका है। दूधिया मालदा की खासियत सिर्फ दूध से सिंचाई तक नहीं थी। इसकी मिट्टी, जलवायु और देखभाल का पूरा तरीका अलग था। किसान पेड़ों की नियमित देखभाल करते थे। दूध के अलावा कुछ खास जैविक खादों का भी इस्तेमाल होता था। नतीजतन आम का गूदा दूधिया सफेद, रस भरा और बेहद मीठा होता था। स्थानीय लोग बताते हैं कि पहले दीघा के इस आम की मांग पूरे देश में थी। अमीर लोग और सेलिब्रिटी भी इसे मंगवाते थे। लेकिन समय के साथ आधुनिक आमों की खेती बढ़ी, बाजार में दूसरे वैरायटी वाले आमों की भरमार हो गई और दूधिया मालदा पीछे छूट गया। रखरखाव महंगा और समय लेने वाला होने के कारण किसान इसकी खेती छोड़ते गए। वर्तमान में कुछ स्थानीय किसान और आम प्रेमी इस आम को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। बचे हुए 100 पेड़ों की सुरक्षा और देखभाल के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि सरकारी सहयोग मिले तो इस दुर्लभ वैरायटी को दोबारा बढ़ावा दिया जा सकता है। दूधिया मालदा ना सिर्फ एक आम है बल्कि बिहार की सांस्कृतिक और कृषि विरासत का प्रतीक भी है।

बिहार में मिला दुनिया का सबसे पुराना बरगद, इसकी उम्र बतायी जा रही है 700 साल

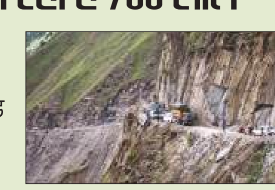

क्या आपने कभी सोचा है कि दुनिया का सबसे पुराना बरगद का पेड़ कहां होगा। आपके मन में ख्याल आता होगा कि सबसे पुराना बरगद का पेड़ या तो विदेश में किसी बड़े जंगल में होगा या किसी ऐतिहासिक स्थल पर होगा। इसका सही जवाब यह है कि बिहार के मुंगेर में सबसे पुराना बरगद का पेड़ है। मुंगेर की धरती पर खड़ा दुनिया के सबसे पुराने बरगद की उम्र 700 साल से भी ज्यादा बताई जा रही है। तीन साल की वैज्ञानिक रिसर्च और कार्बन डेटिंग के बाद इस रहस्य से पर्दा उठा है। मुंगेर के आईटीसी कैंपस में खड़ा यह विशाल बरगद अब सिर्फ एक पेड़ नहीं, बल्कि इतिहास का जीवित गवाह बन चुका है। लंबी-लंबी जटाएं, चारों तरफ फैली शाखाएं और सदियों का सफर तय कर चुका ये वटवृक्ष अब दुनिया के सबसे पुराने बरगद के रूप में पहचाना जा रहा है। स्थानीय लोगों के लिए यह पेड़ हमेशा आस्था और आश्चर्य का केंद्र रहा है। लोग कहते थे कि उनके दादा-परदादा के जमाने में भी यह पेड़ इसी तरह खड़ा था। अब वैज्ञानिकों ने भी लोगों के इस दावे पर मुहर लगा दी है। साल 2022 में बिहार वन विभाग ने इस पेड़ वास्तविक उम्र जानने का फैसला किया। इसकी जिम्मेदारी लखनऊ के बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान यानी बीएसआईपी की वैज्ञानिक डॉक्टर त्रिणा बोस और रिसर्च स्कॉलर अवनीश मिश्रा को सौंपी गई। इस काम में सबसे चुनौती बड़ी यह थी कि बरगद के पेड़ में दूसरे पेड़ों की तरह सालाना छल्ले यानी एनुअल रिंग्स नहीं बनते। ऐसे में वैज्ञानिकों ने पेड़ को बिना नुकसान पहुंचाए उसकी सूखी जटा और एक मोटे तने का सैंपल लिया। इसके बाद शुरू हुई तीन साल लंबी रिसर्च। कार्बन डेटिंग की आधुनिक तकनीक से जब सैंपल की जांच हुई तो वैज्ञानिक भी हैरान रह गए। रिपोर्ट में सामने आया कि पेड़ की उम्र 700 साल से भी ज्यादा है यानी यह बरगद मुगल काल से लेकर अंग्रेजों के शासन और आजाद भारत तक का इतिहास देख चुका है। वैज्ञानिकों का मानना है कि असली पेड़ की उम्र इससे भी ज्यादा हो सकती है, क्योंकि जांच सिर्फ उसके एक हिस्से की हुई थी। दुनिया के सबसे पुराने बरगदों की सूची में शामिल मुंगेर का यह पेड़ पहले स्थान पर आ गया है। दूसरे नंबर पर उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर का सिद्धबाड़ी बरगद है जिसकी उम्र करीब 500 साल मानी जाती है। तीसरे स्थान पर कोलकाता का प्रसिद्ध ग्रेट बनयान ट्री है जिसकी उम्र लगभग 350 साल है। आज मुंगेर का यह बरगद सिर्फ बिहार ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व का प्रतीक बन गया है। 700 साल तक आंधी, तूफान और वक्त की मार झेलने वाला यह पेड़ मानो आने वाली पीढ़ियों को प्रकृति की ताकत और धैर्य का संदेश दे रहा है।

झारखंड में रास सीटों को लेकर महागठबंधन में रार !

झामुमो दोनों सीटों पर उतारेगी अपने उम्मीदवार

» कांग्रेस बोली मामला सुलझा लिया जाएगा

» भाजपा भी अपना उम्मीदवार उतारेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड में राज्यसभा की दो सीटों के चुनाव से पहले राजनीतिक उथलपुथल होने लगी। कुछ सियासी गणित बदलते नजर आ रहे हैं। अब तक महागठबंधन के तहत कांग्रेस और झामुमो के बीच एक-एक सीट पर चुनाव लड़ने की चर्चा थी, लेकिन झामुमो ने दोनों सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने का फैसला किया है। वहीं विपक्ष भाजपा भी अपना उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रही है। शुक्रवार को झामुमो विधायक दल की बैठक के बाद पार्टी ने दोनों सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने का फैसला किया है। बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में मंत्री योगेंद्र प्रसाद और मंत्री हाफिजुल हसन ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं की ओर से दोनों सीटों पर चुनाव लड़ने का लगातार दबाव बनाया जा रहा था।

कार्यकर्ताओं की भावना को देखते हुए पार्टी ने दोनों सीटों पर उम्मीदवार उतारने का निर्णय लिया है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि इस फैसले से महागठबंधन के भीतर सीट बंटवारे को लेकर नई स्थिति उत्पन्न हो सकती है। पिछले कुछ समय से कांग्रेस और झामुमो के बीच कई मुद्दों पर मतभेद की खबरें भी सामने आती रही हैं। अब सभी की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि आने वाले दिनों में दोनों दल राज्यसभा चुनाव को लेकर क्या अंतिम रणनीति अपनाते हैं।

कांग्रेस ने प्रणव झा को उम्मीदवार घोषित किया

इधर कांग्रेस पहले ही प्रणव झा को अपना उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। वहीं भाजपा भी चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी में है। ऐसे में राज्यसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक समीकरण और दिलचस्प हो गए हैं। यदि प्रमुख दल अलग-अलग उम्मीदवार उतारते हैं तो चुनाव में क्रॉस वोटिंग और राजनीतिक जोड़-तोड़ की चर्चाएं भी तेज हो सकती हैं।

कांग्रेस बोली- झारखंड में गठबंधन एकजुट

राज्यसभा चुनाव को लेकर शुक्रवार को पुराना विधानसभा सभागार में कांग्रेस प्रभारी के राजू की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में पार्टी प्रत्याशी प्रणव झा और कांग्रेस के मंत्री और विधायक शामिल हुए। वहीं, मीडिया के सवालों पर प्रभारी के राजू ने कहा कि झामुमो प्रमुख हेमंत सोरेन से इस संदर्भ में बातचीत होगी और गठबंधन में एक सीट कांग्रेस और एक सीट झामुमो के प्रत्याशी की जीत होगी। झारखंड में गठबंधन पूरी तरह से एकजुट है।

जंगल बचाने के नाम पर थारू अंचल की जीवनरेखा पर ताला !

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान प्रशासन का फरमान

» बिना अध्ययन, बिना जनसुनवाई 12 घंटे सड़क बंदी का आदेश

» वरिष्ठ वकील ने हाईकोर्ट जाने की दी चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखीमपुर खीरी। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान प्रशासन द्वारा दुधवा-गौरिफंटा मार्ग को प्रतिदिन शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक बंद करने के आदेश ने सीमावर्ती थारू अंचल में भारी असंतोष पैदा कर दिया है। इस आदेश को लेकर उच्च न्यायालय के अधिवक्ता एस.एम. हैदर रिजवी ने उपनिदेशक, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान को विस्तृत प्रत्यावेदन भेजकर इसे तत्काल वापस लेने की मांग की है। साथ ही चेतावनी दी है कि यदि निर्णय पर पुनर्विचार नहीं किया गया तो मामले को न्यायालय के समक्ष ले जाया जाएगा। रिजवी का कहना है कि जिस सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देकर यह कार्रवाई की जा रही है, वह केवल कोर अथवा क्रिटिकल टाइगर हैबिटेट क्षेत्र पर लागू होता है, जबकि दुधवा-गौरिफंटा मार्ग बफर जोन से होकर गुजरता है।

बफर जोन का उद्देश्य ही वन्यजीव संरक्षण और मानव गतिविधियों के बीच संतुलन स्थापित करना है। ऐसे में पूरी रात सड़क बंद कर देना न केवल आदेश की गलत व्याख्या है, बल्कि स्थानीय जनता के अधिकारों पर भी सीधा प्रहार है। प्रत्यावेदन में कहा गया है कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(डी) प्रत्येक नागरिक को देश में स्वतंत्र आवागमन का अधिकार देता है। किसी सार्वजनिक मार्ग पर प्रतिदिन 12 घंटे का पूर्ण प्रतिबंध लगाना अनुपातहीन और असंगत कदम है।

हजारों लोगों की आवाजाही पर असर

दुधवा-गौरिफंटा मार्ग नेपाल सीमा, दर्जनों थारू बहुल गांवों, किसानों, विद्यार्थियों, मरीजों और सुरक्षा एजेंसियों के लिए जीवनरेखा माना जाता है। क्षेत्र में पहले से ही स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। ऐसे में 12 घंटे की सड़क बंदी लोगों को व्यावहारिक रूप से अलग-थलग कर देगी। स्थानीय लोगों का कहना है कि रात में आपातकालीन चिकित्सा, प्रसव, दुर्घटना या अन्य आकस्मिक परिस्थितियों में यह आदेश गंभीर संकट पैदा कर सकता है।

अफगानिस्तान के खिलाफ मानव सुथार ने किया डेब्यू

» 15 वर्षों में पहली बार अश्विन-जडेजा के बिना उतरी भारतीय टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुल्लांपुर। भारत और अफगानिस्तान के बीच मुल्लांपुर में एकमात्र टेस्ट मुकाबला खेला जा रहा है। भारत ने इस मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया है। राजस्थान के खेल जगत और विशेष रूप से श्रीगंगानगर जिले के लिए शनिवार का दिन सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गया है। मरुधरा की मिट्टी से निकले बेहतरीन बाएं हाथ के ऑर्थोडॉक्स स्पिन ऑलराउंडर मानव सुथार ने फगानिस्तान के खिलाफ मुल्लानपुर (न्यू चंडीगढ़) में शुरू हुए वन-ऑफ टेस्ट मैच में भारतीय क्रिकेट टीम के लिए अपना ऑफिशियल टेस्ट डेब्यू कर लिया है। मैदान पर उतरते ही मानव सुथार भारत की तरफ से टेस्ट खेलने वाले 319वें खिलाड़ी बन गए हैं। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद से ही पूरे राजस्थान के खेल प्रेमियों और उनके पैतृक जिले श्रीगंगानगर में जश्न का माहौल देखा जा रहा है।

मानव सुथार को टॉस से पहले कुलदीप यादव ने टेस्ट कैप पहनाई। मानव 2021 में अक्षर पटेल के बाद भारत के लिए टेस्ट डेब्यू करने वाले पहले विशेषज्ञ स्पिनर हैं। राजस्थान के 23 वर्षीय लेफ्ट आर्म स्पिनर मानव सुथार ने 29 प्रथम श्रेणी मैच में 129 विकेट लिए हैं। वहीं, दलीप ट्रॉफी के डेब्यू मैच में उन्होंने 49 रन देकर सात विकेट झटके थे। इतना ही नहीं, मानव भारत ए के लिए खेल चुके हैं। भारत ए की ओर से उन्होंने चार मैचों में 17 विकेट लिए हैं। वहीं पिछले 15 वर्षों में यह पहली बार है जब भारतीय टीम घरेलू टेस्ट मैच में रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा के बिना उतरी है। नवंबर 2010 में न्यूजीलैंड के खिलाफ नागपुर टेस्ट के बाद ये दोनों गेंदबाज घरेलू मैदान पर हुए टेस्ट मैच में भारत की प्लेइंग-11 का हिस्सा रहे हैं। नवंबर 2010 के बाद 69 घरेलू टेस्ट मैचों में अश्विन या जडेजा में से कोई या दोनों भारतीय एकादश में शामिल रहे हैं। अश्विन अब क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं, जबकि इस मैच के लिए जडेजा को टीम में नहीं चुना गया था। मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने बताया था कि जडेजा को बाहर नहीं किया गया है, बल्कि उन्हें आराम दिया गया है।

पिछले नौ मैचों में दूसरी बार भारत ने जीता टॉस

इस मैच में भारतीय कप्तान शुभमन गिल टॉस जीतने में सफल रहे। नौ टेस्ट में से यह दूसरा ही मौका है जब गिल इस प्रारूप में टॉस जीतने में सफल हुए हैं। वहीं, यह लगातार चौथी बार है जब अफगानिस्तान ने टॉस गंवाया है। यह मैच मुल्लांपुर के महाराजा यदविंद्र सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। इस स्टेडियम में पहली बार टेस्ट मैच हो रहा है। इसके साथ ही न्यू चंडीगढ़ भारतीय पुरुष टीम का 31वां टेस्ट वेन्यू बन गया है।

कर्नाटक में रामलिंगा रेड्डी के इस्तीफे का विवाद सुलझा

» सीएम शिवकुमार बोले- सब कुछ ठीक हो गया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बंगलूरू। कर्नाटक की नई कांग्रेस सरकार बनने के तीन दिन के भीतर पैदा हुआ पहला बड़ा राजनीतिक संकट फिलहाल टल गया है। मंत्री रामलिंगा रेड्डी के इस्तीफे की घोषणा के बाद मचे सियासी घमासान को मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने देर रात हुई लंबी बैठक के बाद शांत कर दिया। मुख्यमंत्री ने साफ कहा कि यह परिवार का मामला था और अब सब कुछ सुलझा लिया गया है। विभागों के बंटवारे को लेकर नाराज चल रहे रामलिंगा रेड्डी ने भी संकेत दिए कि विवाद खत्म हो चुका है।

इस पूरे घटनाक्रम ने कर्नाटक कांग्रेस के भीतर की खींचतान को जरूर उजागर कर दिया। रामलिंगा रेड्डी ने शुक्रवार को मंत्री पद से इस्तीफा देने का ऐलान कर दिया था। उनकी नाराजगी विभागों के बंटवारे को लेकर थी। रेड्डी का दावा था कि उन्हें बंगलूरू विकास विभाग देने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन बाद में उन्हें जल संसाधन विभाग सौंप दिया गया। इसके बाद उन्होंने खुलकर अपनी नाराजगी जाहिर की। कांग्रेस सरकार बनने के तुरंत बाद सामने आई इस नाराजगी ने पार्टी नेतृत्व की चिंता बढ़ा दी थी। माना जा रहा था कि अगर मामला नहीं सुलझता तो सरकार के भीतर असंतोष और बढ़ सकता था।

सरेंडर करने सिविल कोर्ट पहुंचे खान सर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। खान सर पर प्राथमिकी दर्ज हुए 24 घंटे बीत गए लेकिन पटना पुलिस उनको गिरफ्तार नहीं कर पाई। अब फैजल खान पटना सिविल कोर्ट पहुंच चुके हैं। वह सरेंडर करेंगे। कोर्ट में पेश होने के बाद उन्हें जेल भेज दिया जाएगा। इससे पहले शुक्रवार रात्रि से शनिवार सुबह तक पटना पुलिस की टीम खान सर के कोचिंग के पास तो छात्रों की भीड़ जुटने लगी। विधि व्यवस्था प्रभावित न हो, इसलिए पटना पुलिस ने उन्हें बलपूर्वक गिरफ्तार नहीं किया।

देर रात छात्रों की संख्या कम हुई लेकिन इसके बावजूद खान सर ने न तो सरेंडर किया और न ही पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया। शनिवार दोपहर खान सर सरेंडर करने कोर्ट पहुंच गए। इधर, सुबह खान सर के कोचिंग से जुड़े छात्रों को मैसेज आया कि खान सर आज सुबह 10 से 11 बजे क्लास लेंगे। हालांकि, उन्होंने क्लास तो नहीं लिया लेकिन वह सरेंडर करने जरूर सामने आए।

कोचिंग संस्थानों का ये आपस का मामला

» खान सर मामले में जन सुराज के संस्थापक बोले- इस मामले में जानकारी नहीं है तो कुछ नहीं कहना चाहता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव, नीट परीक्षा पेपर लीक मामला और खान सर कोचिंग सेंटर फायरिंग केस पर प्रतिक्रिया दी है। खान सर के खिलाफ एफआईआर और उनकी गिरफ्तारी को लेकर प्रशांत किशोर ने कहा कि कि यह कोचिंग संस्थान चलाने वाले लोगों के बीच आपस का मामला और झगड़ा है। मैं उसका विशेषज्ञ नहीं हूं। मुझे इस मामले में जानकारी नहीं है तो कुछ नहीं कहना चाहता। वहीं नीट परीक्षा के पेपर लीक पर उन्होंने कहा कि पेपर लीक की समस्या एक व्यवस्थागत समस्या है, न कि कोई अलग-थलग घटना।

जब तक कोचिंग संस्थान शिक्षा क्षेत्र पर हावी रहेंगे, पेपर लीक होते रहेंगे। दो साल पहले भी देश के स्तर पर नीट का पेपर लीक हुआ था। और आगे भी होगा। प्रशांत ने कहा कि शायद ही कोई ऐसी परीक्षा बची हो जिसका पेपर लीक न होता हो। क्योंकि पिछले 10 से 15 सालों में कोचिंग संस्थानों का दबदबा इतना बढ़ गया है कि वे छात्रों को आकर्षित करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। इसीलिए पेपर लीक हो रहे हैं। जब तक सरकार इस व्यवस्था में कोचिंग संस्थानों के प्रभाव को कम नहीं करेगी तब तक ये होता रहेगा चाहें सरकार का कोई भी दावा हो।

बांकीपुर उपचुनाव को लेकर सरकार को घेरा

ऐसे में एक तरीके से बांकीपुर में होने वाला उपचुनाव 25 में बीजेपी द्वारा किए गए वादों पर उनके लिए जनमत संग्रह होगा। जनता का मत होगा कि जो वादे जनता से किए गए हैं,चाहे वे 2 लाख रुपये देने का वादा हो। बिहार से पलायन बंद करने का वादा हो, शिक्षा व्यवस्था और रोजगार को सुधारने की बात हो। इन बातों पर एक तरीके से जनता को अपना मत देने का जनमत संग्रह का अधिकार होगा। उन्होंने कहा कि जनसुराज यह समझता है कि हम लोगों को पूरी ताकत से बांकीपुर का चुनाव लड़ना होगा. ताकि बीजेपी ने जो हम लोगों के साथ किया, एनडीए ने जो जनसुराज के साथ किया या फिर बिहार में बदलाव की इच्छा का रखने वाले लोगों के साथ जो धोखा दिया है जिसका जवाब बांकीपुर में उनका हराकर दिया जा सके।

बिहार में सियासी वार-पलटवार फिर जारी

पूर्व मुख्यमंत्री लालू-राबड़ी की सुरक्षा में कटौती पर घमासान, राजद ने एनडीए सरकार पर किया प्रहार

» नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने भी लौटाई अपनी सुरक्षा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में सियासी वार-पलटवार थम नहीं रही है। एनडीए सरकार ने एक बार फिर विपक्षी दल राजद के शीर्ष नेतृत्व बदले की कार्रवाई की है। अबकी बार लालू यादव और राबड़ी देवी की सिक्यॉरिटी घटाने के फैसले का आरजेडी ने तीखा विरोध किया है। पार्टी ने कहा कि दोनों नेताओं को ये अपमानित करने का प्रयास है। इस बीच राबड़ी देवी ने अपने आवास पर तैनात बाकी पुलिसकर्मियों को वापस भेज दिया है।

यही नहीं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने भी अपनी वाई कैटेगरी की सुरक्षा वापस कर दी हे। बतादें इससे पहले पूर्व सीएम राबड़ी देवी को सरकारी बंगला खाली करने के लिए नोटसि दी गई थी। जिसका पूर्व सीएम ने विरोध करते हुए मकान खाली करने से मना कर दिया था। बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी और पूर्व सीएम लालू यादव की सुरक्षा में कटौती करने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। पहले लालू और राबड़ी दोनों को जेड प्लस सिक्यॉरिटी मिलती थी पर अब इसमें बदलाव कर दिया है। सरकार के इस कदम से पूर्व सीएम राबड़ी देवी काफी नाराज हैं और विरोधस्वरूप उन्होंने अपने आवास पर तैनात बाकी सुरक्षाकर्मियों को भी वापस कर दिया है। 4 जून को लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी की सुरक्षा में कटौती की गई थी।

लालू परिवार को अपमानित कर रही सरकार : शक्ति यादव

सरकार के फैसले के बाद राबड़ी देवी ने खुद ही अपनी सुरक्षा वापस कर दी है। आरजेडी के मुख्य प्रवक्ता शक्ति यादव ने बयान जारी कर इसकी जानकारी दी। उन्होंने आरोप लगाया कि लालू परिवार को अपमानित कर रही सरकार। उन्होंने कहा कि आरजेडी के और नेता सुरक्षा वापस कर सकते हैं।

राबड़ी देवी की सुरक्षा व्यवस्था

1. बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस से 2-8 हाउस गार्ड
2. पटना जिला बल से 3 महिला अंगरक्षक (सादे लिवास में)
3. पटना जिला बल से 3 अंगरक्षक (वर्दीधारी)
4. एचक्यूआरटी से पायलट तथा बुलेट प्रूफ कार
5. पटना जिला बल से स्कार्ट तथा पायलट की प्रतिनियुक्ति की जायेगी।

लालू यादव की सुरक्षा व्यवस्था

विशेष सुरक्षा दल अधिनियम-2010 के प्रावधानानुसार लालू प्रसाद यादव को सुरक्षा दी गई है।

1. बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस से 2-8 हाउस गार्ड
2. पटना जिला बल से 2 अंगरक्षक
3. एचक्यूआरटी से पायलट तथा बुलेट प्रूफ कार
4. पटना जिला बल से स्कार्ट तथा पायलट की प्रतिनियुक्ति की जायेगी।

अन्नामलाई के बीजेपी छोड़ते ही टूटने लगी पार्टी, कई ने भाजपा का दामन छोड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु भाजपा को उस समय बड़ा झटका लगा जब पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई के इस्तीफे के कुछ ही घंटों बाद दो नेताओं ने पार्टी छोड़ दी। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष करुणा नागराजन और प्रदेश सचिव सुमति वेंकटेश ने भी अपना इस्तीफा दे दिया। नागराजन और वेंकटेश ने भाजपा से अपने इस्तीफे की पुष्टि की। भाजपा के तमिलनाडु के पूर्व उपाध्यक्ष ने अन्नामलाई की नई राजनीतिक पार्टी में शामिल होने की इच्छा जताई।

नागराजन ने कहा कि अन्नामलाई मुख्यमंत्री विजय ही नहीं, बल्कि किसी की भी गलतियों को उजागर करने में संकोच नहीं करते थे। खबरों के अनुसार, उन्होंने अन्नामलाई को विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान रखने वाला एक साहसी और सक्षम नेता बताया। इस बीच, वेंकटेश ने सोशल मीडिया पर अपना त्यागपत्र पोस्ट करते हुए कहा कि उन्होंने भारी मन से अपने पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है और पार्टी से अपना संबंध समाप्त कर रही हैं। उन्होंने लिखा कि पार्टी की सेवा करना मेरे लिए

बहुत गर्व और सौभाग्य की बात रही है। मैं माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व और भाजपा द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद, देशभक्ति और राष्ट्र सेवा के आदर्शों से अत्यंत प्रेरित हूं। इन मूल्यों ने मेरे पूरे सफर में मेरा मार्गदर्शन किया है और आगे भी करते रहेंगे। तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष के. अन्नामलाई द्वारा भारतीय जनता पार्टी से इस्तीफा देने के बाद ये इस्तीफे सामने आए हैं, जिससे उनके राजनीतिक भविष्य को लेकर हफ्तों से चल रही अनिश्चितता समाप्त हो गई है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता और संगठनात्मक जिम्मेदारियों दोनों से उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है, जिससे भाजपा के साथ अन्नामलाई का छह साल का जुड़ाव समाप्त हो गया है।

टीएमसी में मची कलह से सियासी कोहराम

» ममता बनर्जी की बैठकों में नहीं पहुंच रहे नेता

» हाई-लेवल बैठक में सिर्फ 8 विधायक और 6 सांसद ही मौजूद रहे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर मची अंदरूनी कलह और बगावत अब खुलकर सामने आने लगी है। पार्टी प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को संगठन के भीतर लगातार कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है। इस संकट के बीच, ममता बनर्जी ने अपने कालीघाट स्थित आवास पर पार्टी के सांसदों और विधायकों की एक बेहद महत्वपूर्ण बैठक बुलाई थी, लेकिन इसमें जनप्रतिनिधियों की बेहद कम संख्या ने राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज कर दी है।

पार्टी के विशाल संख्या बल के मुकाबले इस हाई-लेवल बैठक में सिर्फ 14 जनप्रतिनिधि (8 विधायक और 6 सांसद) ही व्यक्तिगत रूप से मौजूद रहे। जानकारी के लिए बता दें कि टीएमसी के पास 42 सांसद (लोकसभा में 29 और राज्यसभा में 13) और पश्चिम बंगाल विधानसभा में 80 विधायक हैं। हालांकि, शुक्रवार को कोलकाता में ममता के आवास पर हुई हाई-लेवल बैठक में सिर्फ़ आठ विधायक और छह सांसद ही पहुंचे।बैठक में शामिल होने वाले विधायकों में बीना मंडल, अशिमा पात्रा, मदन मित्रा, कुणाल घोष, फिरहाद हकीम, शोभनदेव चट्टोपाध्याय, बिमान बनर्जी और अशोक कुमार देब शामिल थे। वहीं, डोला सेन, माला रॉय, कल्याण बनर्जी, अभिषेक बनर्जी, डेरेक ओ ब्रायन और सुदीप बंद्योपाध्याय वे छह सांसद थे जो बैठक में पहुंचे।

इस घटना ने एक बार फिर ममता के सामने बढ़ रही बगावत को उजागर किया, लेकिन पार्टी ने तुरंत सफाई देते हुए कहा कि यह सभी विधायकों की बैठक नहीं थी। टीएमसी ने एक बयान में कहा, कृपया ध्यान दें - यह नेशनल वर्किंग कमेटी की बैठक थी, न कि सभी विधायकों या सांसदों की। महुआ मोइत्रा, सुष्मिता देव, मुकुल संगमा और राजेश त्रिपाठी जैसे कई सांसद, जो नेशनल वर्किंग कमेटी का हिस्सा हैं, वर्चुअल तरीके से इसमें शामिल हुए थे।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, लोकसभा सांसद यूसुफ पठान से बहरामपुर सीट खाली करने के लिए कह सकती है उन्होंने 24 के आम चुनावों में कांग्रेस के दिग्गज नेता अधीर रंजन चौधरी को हराकर यह सीट जीती थी। इस बारे में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन ममता का निचले सदन में जाना दिलचस्प होगा और संभवत: यह लोकसभा में उनके खिलाफ हो रही बगावत को दबाने की एक चाल हो सकती है।

पंजाब में दिल दहला देने वाला सड़क हादसा

» ट्रक और महिंद्रा पिकअप की टक्कर में 8 की मौत

» अस्थियां विसर्जित करने जा रहा था परिवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के फिरोजपुर-फाजिल्का रोड पर शनिवार सुबह एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा सामने आया है। यहाँ एक ट्रक और महिंद्रा पिकअप गाड़ी के बीच हुई आमने-सामने की भीषण टक्कर में कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई, जबकि 15 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। यह दर्दनाक हादसा फिरोजपुर के जंगावाला गांव के पास हुआ।

शुरुआती जानकारी के मुताबिक, पिकअप गाड़ी में सवार यात्री जलालाबाद इलाके के रहने वाले थे। वे अपने एक मृतक रिश्तेदार की अस्थियां विसर्जित करने के लिए ब्यास स्थित राधा स्वामी डेरा जा रहे

थे। इस गाड़ी में लगभग 25 लोग सवार थे, जो आपस में रिश्तेदार बताए जा रहे हैं। तभी रास्ते में जंगावाला गांव के समीप सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने पिकअप को जोरदार टक्कर मार दी।

चश्मदीदों के मुताबिक, दोनों गाड़ियों के बीच टक्कर इतनी ज़बरदस्त थी कि पिकअप वैन के परखच्चे उड़ गए। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। घटना की सूचना मिलते ही इमरजेंसी सेवाएं मौके पर पहुंचीं और घायलों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहाँ इलाज के दौरान चार अन्य लोगों की भी मौत हो गई। हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से सभी घायलों को फिरोजपुर के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डॉक्टरों के मुताबिक, घायल हुए 15 से अधिक लोगों में से कईयों की हालत बेहद नाजुक बनी हुई है। गंभीर स्थिति को देखते हुए आशंका जताई जा रही है कि मरने वालों का आंकड़ा अभी और बढ़ सकता है।

जांच में जुटी पुलिस

स्थानीय पुलिस ने इस दर्दनाक हादसे के संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही है कि हादसा किस गाड़ी की लापरवाही या तेज रफ्तार के कारण हुआ। इस दुखद घटना के बाद से मृतकों के परिवारों में कोहराम मच गया है और पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है।

कुवैत और बहरीन में गूंजे हवाई हमले के सायरन, ईरान के हमलों से खौफ में लोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ईरान-अमेरिका संघर्ष विराम के बीच शनिवार को हुए जवाबी हमलों ने सीजफायर के लिए खतरा पैदा कर दिया। इस दौरान कुवैत और बहरीन पर मिलाइलों और ड्रोन से हमले हुए। वीडियो में कुवैत के ऊपर हवा में मिसाइलों को रोकते हुए दिखया गया, जबकि बहरीन में सायरन बज रहे हैं। ईरानी सेना के प्रवक्ता इब्राहिम जोल्फगारी ने हालिया तनाव के लिए अमेरिका को जिम्मेदार ठहराते हुए कुवैत जाने वाले यात्री विमानों को अपना रास्ता बदलने की सलाह दी।

उन्होंने देश के नागरिकों को हवाई अड्डों से दूर रहने की भी सलाह दी। कुवैत एयर पोर्ट पर 24 उड़ानें रद कर दी गईं और 15 में देरी हुई, जबकि हमलों के बीच विमानों को रोका गया या उनका रास्ता बदला जा रहा है। कुवैत क एयर स्पेस पूरी तरह से खाली हो गया। अमेरिकी सैन्य अधिकरियों ने कहा कि ईरान ने शुक्रवार को कुवैत और बहरीन की ओर सात बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। इससे कुछ घंटे पहले ही चार ईरानी वन-वे अटैक ड्रोन को नाकाम करने की खबर आई थी। यह स्पष्टीकरण तब आया, जब ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड ने कहा कि उसने कुवैत में अमेरिकी सेना वाले अली अल सलेम एयरबेस और बेहरीन में अमेरिकी नौसेना के 5वें बेड़े को निशाना बनाया।

अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने 6 मिसाइलों को रोका

अमेरिकी सेट्रंल कमांड ने कहा कि उसने ईरान द्वारा दागी गई 6 मिसाइलों को रोक दिया और सातवीं मिसाइल अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई। बयान में कहा गया कि फिलहाल अमेरिकी कर्मियों को किसी नुकसान की खबर नहीं है और बहरीन में अपने 5वें बेड़े के मुख्यालय को नुकसान पहुंचाने के ईरान के दावे झूठे हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा